

देश विदेश की लोक कथाएँ — भूत ४



भूतों की लोक कथाएँ



संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title : Bhooton Ki Lok Kathayen (Ghosts Folktales)
Cover Page picture: Ghosts
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com

Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018

No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World



विंडसर, कॅनेडा

दिसम्बर 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका	4
भूतों की लोक कथाएँ.....	5
1 डरा हुआ दरजी	7
2 निडर आदमी.....	15
3 छोटा निडर जौन	28
4 शापित रानी का महल	35
5 पानी का भूत और मछियारा	47
6 ज़ोर से बोलने वाली स्त्री.....	67
7 चूहों की शादी.....	78
8 भूत ब्राह्मण	88
9 भूतनी पत्नी	97
10 भूत जो थैले में बन्द होने से डरता था.....	102
11 भूत जो भाग गया	109
12 बॉसुरी	119
13 शिकारी और उसकी करामाती बॉसुरी	128
14 टिनटिन्यिन और भूतों की दुनियाँ का राजा.....	136

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाएँ किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाएँ हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाएँ केवल ज़बानी ही कही जाती थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाएँ अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाएँ हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1500 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाएँ तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाएँ हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाएँ यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी हैं पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याएँ आयी हैं जिनमें से दो समस्याएँ मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया है ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाएँ “देश विदेश की लोक कथाएँ” नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छपी जा रही हैं। ये लोक कथाएँ आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
दिसम्बर 2018

भूतों की लोक कथाएँ

संसार में सात महाद्वीप हैं - एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया - सबसे बड़े से सबसे छोटा।

भूत, आत्माएँ, जिन्न, राक्षस, प्रेत, जादूगर और जादूगरनियों आदि किसी न किसी रूप में दुनियाँ में सब जगह पाये जाते हैं। और इसी लिये सभी धर्मों में इनमें विश्वास रखने वाले भी मौजूद हैं और इनको भगाने वाले भी। इस पुस्तक में हम दुनियाँ के कई देशों से इकट्ठी की गयी इन्हीं भूतों से सम्बन्धित कुछ लोक कथाएँ अपने हिन्दी भाषा जानने वालों के लिये इस पुस्तक में प्रकाशित कर रहे हैं।

इससे पहले हमने राक्षसों और जादूगरनियों आदि की लोक कथाएँ प्रस्तुत की थीं।¹

आशा है कि ये कहानियाँ दूसरे देशों के जीवन और उनके विश्वासों की एक झलक प्रस्तुत करने में सहायता करेंगी।

¹ "Rakshason Ki Lok Kathayen" and "Jadoogarniyon Ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta published in Hindi language.

1 डरा हुआ दरजी²

भूतों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के स्कौटलैंड देश में कही सुनी जाती है।

स्काटलैंड के रहने वाले एक लेयर्ड³ मैकडोनाल्ड⁴ ने अपना यह नियम बना रखा था कि रात को सोने से पहले वह हर रोज किले की दीवारों पर चलता था। उसका कहना था कि इससे उसको रात को नींद अच्छी आती थी।

एक बार जब वह इस तरह किले की दीवार पर चल रहा था तो उसको अपने शरीर में दो जगह कॅपकॅपी महसूस हुई – एक बाहर की तरफ और एक अन्दर की तरफ।



जो कॅपकॅपी उसको बाहर की तरफ महसूस हुई वह तो ठंडी रात की वजह से थी। ठंडी हवा उसके जैकेट⁵ में से हो कर अन्दर तक पहुँच रही थी। वह थोड़ा बुड्ढा हो गया था इसलिये अब

² The Haunted Tailor – a folktale from Scotland, Europe. Adapted from the Website :

<http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=194>

Retold and written by Mike Lockett.

³ A Laird is a member of the Scottish gentry, who bears the designation Laird of X, where X is the place name. In the non-peerage table of precedence, a Laird ranks below a Baron and above an Esquire

⁴ Laird MacDonald

⁵ Translated for the word “Kilt” – Kilt is knee-length garment with pleats at the rear originating in the traditional dress of the men in the Scottish highlands of the 16th century.

उसको ठंड पहले के मुकाबले में ज़्यादा भी लगने लगी थी।

पर दूसरी कॅपकॅपी उसको दूर गाँव के चर्च की एक खिड़की से आती अजीब सी रोशनी देख कर हुई। यह चर्च जहाँ वह खड़ा हुआ था वहाँ से कुछ मील की दूरी पर था।

उसको लगा कि उधर से उसने किसी के रोने और चिल्लाने की आवाज भी सुनी। उसने यह भी सुन रखा था कि चर्च के पास की जगह डरावनी थी। हर रोज वहाँ शाम को सूरज छिपने के बाद एक भयानक राक्षस आया करता था।

जब मैकडोनाल्ड वहाँ कॅपता सा खड़ा था तो उसके दिमाग में एक विचार आया जिससे वह दोनों तरह की कॅपकॅपाहट से छुटकारा पा सकता था।

वह अपनी जैकेट को एक दूसरी तरह के कपड़े यानी पैन्ट से बदल लेगा। यह पैन्ट रात को ठंडी हवाओं में घूमने के समय ज़्यादा गरम रहेगी।

तो यह तो उसको बाहर से पैदा करने वाली कॅपकॅपाहट से बचायेगी और दूसरी अन्दर वाली कॅपकॅपाहट के लिये वह उस दरजी की सहायता लेगा जो उसकी यह पैन्ट सिलेगा।

सो अगले दिन मैकडोनाल्ड ने अपने दरजी को किले में बुलाया और उससे कहा — “तुम पैन्ट सिलने के लिये मेरा नाप ले लो और फिर उसको सिलने के लिये कहीं किसी खास जगह चले जाओ।”

दरजी की कुछ समझ में नहीं आया तो उसने पूछा — “जनाब, मैं कहाँ चला जाऊँ?”

मैकडोनाल्ड बोला — “बजाय सीधे घर जाने के मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी यह पैन्ट गाँव के चर्च में सिलो। मैं तुमको इसको कब्रों के बीच में सिलने के लिये ज़्यादा पैसे दूँगा। इस तरह से मैं बिना वहाँ जाये यह जान पाऊँगा कि चर्च को कौन डरावना बना रहा है।”

जब दरजी ने यह सुना तो वह तो खुद भी डर के मारे काँप गया। उसकी ऐसी कोई इच्छा नहीं थी कि वह उस जीव को देखे जो चर्च को डरावना बना रहा था।

पर उसको पैसे अच्छे मिल रहे थे सो उसने अपनी हिम्मत बटोरी और वह उसी समय उसकी पैन्ट वहाँ सिलने के लिये तैयार हो गया।

मैकडोनाल्ड ने सोचा कि पैन्ट सिलते सिलते उसको वहाँ रात तो हो ही जायेगी पर वह दरजी भी होशियार था। उसने उस पैन्ट की सिलाई इस तरह से सोच कर रखी थी कि वह उस पैन्ट को वहाँ किसी आत्मा के आने और उसको परेशान करने से पहले ही खत्म कर ले।

सो दरजी सीधे चर्च गया। वह उसके लोहे के दरवाजे से अन्दर घुसा और सीधा कब्रिस्तान में चला गया। वहाँ उसने संगमरमर की

एक कब्र पर अपना कपड़ा बिछाया और उसको मैकडोनाल्ड के नाप के अनुसार जल्दी जल्दी काटा।

उसके बाद वह चर्च के अन्दर गया। तब तक सूरज सिर पर चढ़ आया था। वहाँ उसने उसकी पैन्ट सिलनी शुरू कर दी।

चर्च शान्त था और कोई भी अजीब चीज़ न तो वहाँ उसको दिखायी पड़ रही थी और न सुनायी ही पड़ रही थी।

दरजी ने अब पैन्ट की दूसरी टॉग सिलनी शुरू कर दी थी कि सूरज आसमान में से गायब हो गया। दरजी ने एक मोमबत्ती जलायी और अपनी बढ़िया सिलाई जारी रखी।

अचानक चर्च का फर्श हिलने लगा। दरजी की उँगलियों के बीच में से सुई फिसल गयी और उसकी उँगली में पहनने वाली टोपी⁶ भी नीचे गिर गयी।

वह उनको उठाने के लिये नीचे झुका तो उसने बड़ी अजीब सी चीज़ देखी। चर्च के दरवाजे के सामने लगे कुछ टाइल्स अपनी जगह से हट गये और ऐसा लगा जैसे वहाँ एक नयी कब्र निकल आयी हो।

वह कब्र खुलती गयी और खुलती गयी और उसमें से एक बड़ा बदसूरत सा सिर बाहर निकल आया। वह बदसूरत सिर जोर से चिल्लाया — “क्या तुम मेरा यह सिर देख रहे हो?”

⁶ Translated for the word “Thimble” – Thimble is a little metal cap worn by tailors to save their finger tip from needle pricks.

दरजी पैन्ट ऊपर को उठाते हुए बोला — “हाँ मैं देख रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।” उसने उसकी तरफ न देखने का बहाना किया और अपना काम जारी रखा।

वह सिर कब्र में से थोड़ा सा और ऊपर निकला और फिर दरजी से पूछा — “क्या तुम मेरी गरदन देख रहे हो?”

दरजी फिर पैन्ट ऊपर को उठाते हुए बोला — “हाँ मैं देख रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।” उसने उसकी तरफ न देखने का फिर बहाना किया और पैन्ट के अन्दर का हिस्सा बाहर की तरफ पलट कर उसकी कमर की पट्टी सिलने लगा।

जमीन अब कुछ और ज़्यादा खुली और उस आदमी के बड़े कन्धे और ऊपर का धड़ निकल आया। वह फिर बोला — “क्या तुम मेरी यह चौड़ी छाती देखते हो?”

दरजी बोला — “हाँ मैं देख रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।” और उसने जल्दी जल्दी फिर सिलना शुरू कर दिया। अब उसकी सिलाई पहले की तरह से एक सी, सुन्दर और साफ नहीं आ रही थी।

अब तक चाँद भी आसमान में ऊपर चढ़ आया था और उसकी पैन्ट अभी तक सिली नहीं थी। दरजी वहाँ से भाग जाना चाहता था पर उसको मालूम था कि अपने वायदे के अनुसार अगर उसने अपना काम इस चर्च में पूरा नहीं किया तो उसको पैसे नहीं मिलेंगे।

इतने में दो लम्बी बाँहें उस कब्र में से बाहर निकलीं और उस दरजी की तरफ बढ़ीं और उसके साथ साथ निकली उसकी कमर भी। वह बोला — “क्या तुम मेरी यह मजबूत बाँहें देखते हो?”

दरजी बोला — “हाँ मैं देख तो रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।” वह और जल्दी जल्दी हाथ चलाने लगा पर अब उसके टाँके कुछ दूर दूर लग रहे थे। उसके हाथ अब उस कपड़े पर उड़ते से दिखायी दे रहे थे।

उस जीव ने कब्र में से अपनी एक टाँग बाहर निकाली और बहुत जोर से चिल्लाया — “क्या तुम मेरी यह लम्बी टाँग देखते हो?”

दरजी बोला — “हाँ हाँ मैं सब देख रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।” और उसने उस पैन्ट के आखीर के बहुत सारे टाँके जल्दी जल्दी लगाये और उनमें गाँठ लगा कर अपना काम खत्म कर दिया।

यह सब करके उसने मोमबत्ती बुझा दी और उस जीव ने तभी कब्र में से अपनी दूसरी टाँग भी बाहर निकाली। अब उस जीव ने चलना शुरू कर दिया था।

दरजी ने एक हाथ में अपना सिलाई का बक्सा पकड़ा और दूसरे हाथ में पैन्ट पकड़ी और दरवाजे की तरफ भाग लिया। जब वह बाहर भाग रहा था तो उसने अपने पीछे पैरों के आने की आवाज सुनी।

दरजी ने और जल्दी चलना शुरू कर दिया तो उन पैरों की आवाज भी और तेज़ हो गयी। दरजी चर्च का दरवाजा खोल कर बाहर निकला और तुरन्त ही दरवाजा बन्द कर दिया।

वह कब्रिस्तान में आधी दूर ही पहुँचा था कि उसने चर्च के दरवाजे के खुलने और बन्द होने की आवाज सुनी। वह कब्रिस्तान के दरवाजे से बाहर निकला और किले की तरफ भाग लिया।

उसने अपने पीछे कब्रिस्तान के दरवाजे की चरचराहट की आवाज भी सुनी और फिर पैरों की आवाज भी अपने पीछे आती सुनी।

दरजी की हिम्मत नहीं पड़ी कि वह पीछे मुड़ कर देखता कि उसके पीछे क्या आ रहा था। वह तो बस किले की तरफ भागता ही चला गया।

उधर लेयर्ड मैकडोनाल्ड ने देखा कि दरजी तो उसी के किले की तरफ भागा चला आ रहा है और उसके पीछे है एक बहुत बड़ा जीव जो उसको पकड़ना ही चाहता है।

उसने तुरन्त ही किले के दरवाजे खोलने का हुकुम दिया और समय रहते रहते ही उसके नौकरों ने किले का दरवाजा खोल दिया।

दरजी किले के अन्दर घुस गया और इससे पहले कि वह जीव हाथ बढ़ा कर उसको पकड़ता उसके नौकरों ने दरवाजा बन्द भी कर दिया। उस जीव के हाथ केवल किले के लकड़ी के दरवाजे पर ही पड़ पाये।

मैकडोनाल्ड ने दरजी को पैन्ट की सिलाई के पैसे दिये और साथ में उसको चर्च में सिलने के पैसे अलग से दिये। इस तरह से लेयर्ड ने अपनी दोनों तरह की कॅपकॅपाहट खत्म कर दीं।

उसकी बाहर से पैदा होने वाली कॅपकॅपाहट तो उस जैकेट की जगह वह पैन्ट पहनने से खत्म हो गयी और उसकी अन्दर की कॅपकॅपाहट तब खत्म हो गयी जब उसने चर्च के पादरी से उस जगह पर पवित्र पानी छिड़कवा दिया जहाँ से वह बहुत बड़ा जीव बाहर निकला था।

दरजी ने कभी किसी को नहीं बताया कि उसके साथ क्या हुआ था। पर बाद में तो उसको बताने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

हर आदमी उस जीव के बारे में जानता था जिसने उस दरजी का पीछा किया था क्योंकि उसके बड़े बड़े हाथों के निशान किले के दरवाजे पर अभी भी पड़े हुए थे जब उसने उस रात उस दरवाजे को अपने हाथों से पीटा था।



2 निडर आदमी⁷

भूतों की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के आयरलैंड देश की लोक कथाओं से ली है। इस कथा में यह लड़का किसी भूत से नहीं डरता।

एक बार की बात है कि एक स्त्री थी जिसके लौरैन्स और कैरौल⁸ नाम के दो बेटे थे। लौरैन्स शुरू से ही बड़ा निडर था और कैरौल शाम से ही घर में छिप कर बैठ जाता था।

उन दिनों आयरलैंड में कुछ ऐसा रिवाज था कि जब कभी कोई मर जाता था तो उसकी कब्र की तीन दिन तक रखवाली करनी पड़ती थी क्योंकि रात को कब्रिस्तान में प्रेत आत्माएँ घूमती रहती थीं और कभी कभी वे कब्र से शरीर को चुरा कर भी ले जाती थीं।

जब लौरैन्स और कैरौल की माँ मरी तो इन दोनों को भी अपनी माँ की कब्र की रखवाली करनी थी। कैरौल बोला — “भाई, तुम तो बड़े निडर हो तो आज तुम ही माँ की कब्र की पहरेदारी करो तो जाने।”

लौरैन्स बोला — “तुम क्या समझते हो कि मैं अपनी माँ की कब्र की रखवाली नहीं कर सकता? मेरे अन्दर इतना साहस है कि मैं

⁷ Dauntless Man – a folktale from Ireland, Europe

⁸ Lawrence and Carol – names of the two sons of a woman

यह काम बड़े आराम से कर सकता हूँ।” यह कह कर लौरैन्स चला गया।

वह माँ की कब्र के पास पहुँचा और वहाँ पास में पड़े एक पत्थर के ऊपर बैठ कर पहरा देने लगा। बहुत रात बीत गयी। उसे नींद भी आने लगी कि उसने देखा कि बिना शरीर का एक सिर लुढ़कता हुआ चला आ रहा है।

वह डरा नहीं। उसने अपनी तलवार निकाल ली कि अगर वह उसके पास आया तो वह उसको अपनी तलवार से काट कर रख देगा। पर वह उसके पास आया ही नहीं।

लौरैन्स भी उसको बराबर देखता रहा। इतने में सवेरा हो गया। वह बिना शरीर का सिर गायब हो गया और इधर लौरैन्स भी अपने घर वापस आ गया।

कैरौल ने पूछा — “भाई, तुमने कब्रिस्तान में कुछ देखा क्या?”

लौरैन्स बोला — “हाँ, देखा तो था, और आज अगर मैं वहाँ न होता तो मेरी माँ के शरीर की चोरी ज़रूर हो जाती।”

कैरौल ने फिर पूछा — “जो कुछ तुमने देखा वह ज़िन्दा था कि मुर्दा?”

लौरैन्स बोला — “यह तो मुझे पता नहीं चला क्योंकि वह तो बिना शरीर का एक सिर था।”

कैरौल मुस्कुरा कर बोला — “तुम डरे नहीं?”

लौरैन्स बोला — “नहीं, बिल्कुल भी नहीं। तुम्हें मालूम नहीं क्या कि मैं दुनियाँ में किसी भी चीज़ से नहीं डरता।”

कैरौल बोला — “तो फिर तुम अगर आज फिर से माँ की कब्र की पहरेदारी करो तो जानूँ?”

लौरैन्स बोला — “आज की यह शर्त मैं तुमसे लगाता हूँ। आज मुझे नींद आ रही है। माँ की कब्र की रखवाली के लिये आज तुम जाओ।”

कैरौल बोला — “मुझे तो अगर कोई दुनियाँ भर का खजाना भी दे न, तो भी मैं यह काम नहीं कर सकता।”

लौरैन्स बोला — “पर अगर आज कब्र की पहरेदारी न की गयी तो माँ का शरीर चला जायेगा।”

कैरौल बोला — “अगर तुम आज और कल के बदले में यह काम कर लो तो फिर मैं तुमसे कभी किसी काम के लिये नहीं कहूँगा। पर मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे तुम कुछ डर गये हो।”

लौरैन्स बोला — “तुमको यह बताने के लिये कि मैं डरा नहीं हूँ मैं दोनों दिन माँ की कब्र की पहरेदारी करूँगा।” और यह कह कर वह सोने चला गया।

शाम होने पर वह उठा, अपनी तलवार सँभाली और कब्रिस्तान की तरफ चल दिया। वह सीधा उसी पत्थर के पास पहुँचा जहाँ वह पिछले दिन बैठा था और उसी पत्थर पर बैठ कर अपनी माँ की कब्र की पहरेदारी करने लगा।

आधी रात के करीब फिर उसको कोई बड़ी सी चीज़ जोर की आवाज के साथ अपनी तरफ आती दिखायी दी। उसने तुरन्त अपनी तलवार निकाली और उससे उसके दो टुकड़े कर दिये। मगर तुरन्त ही वे दोनों टुकड़े गायब भी हो गये।

सुबह होने पर लौरैन्स घर वापस आ गया।

कैरौल ने उससे फिर पूछा — “भाई, आज भी तुमने कहीं कुछ देखा क्या?”

लौरैन्स बोला — “हाँ देखा था और अगर आज भी मैं माँ की कब्र की पहरेदारी न कर रहा होता तो आज तो माँ का शरीर उसकी कब्र से ज़रूर ही चला जाता।”

कैरौल ने पूछा — “क्या वही बिना शरीर वाला सिर फिर से वहाँ आया था?”

लौरैन्स बोला — “नहीं, अबकी बार वह तो नहीं था पर वह कोई बड़ी सी काली सी चीज़ थी जो मेरी माँ की कब्र खोद रही थी तभी मैंने अपनी तलवार से उसके दो टुकड़े कर दिये।”

उस दिन लौरैन्स फिर सो गया और जब वह शाम को उठा तो फिर अपनी तलवार ले कर कब्रिस्तान की तरफ चल दिया। और फिर उसी पत्थर पर बैठ कर माँ की कब्र की पहरेदारी करने लगा।

इस बार आधी रात के बाद उसे कोई सफ़ेद सी चीज़ आती दिखायी दी। वह तुरन्त ही अपनी तलवार निकाल कर उसे भी मारने के लिये तैयार हो गया।

लौरैन्स ने देखा कि उस सफेद चीज़ के ऊपर एक आदमी का सिर था और उसके दाँत बहुत बड़े थे।

जैसे ही लौरैन्स ने उसको मारने के लिये अपनी तलवार उठायी तो वह सिर बोला — “रुक जाओ, तुमने अपने माँ के शरीर की रक्षा की है और तुम्हारे जैसा बहादुर आदमी तो इस आयरलैंड की धरती पर और दूसरा कोई है भी नहीं। अगर तुम ढूँढने निकलोगे तो एक बहुत बड़ा खजाना तुम्हारा इन्तजार कर रहा है।”

सवेरा होने पर लौरैन्स घर पहुँचा तो कैरौल ने फिर पूछा — “भाई, आज भी तुम्हें कोई दिखायी दिया क्या?”

लौरैन्स बोला — “हाँ दिखायी तो दिया परन्तु क्योंकि मैं वहाँ था इसी लिये मेरी माँ का शरीर बच गया पर अब उसके शरीर को कोई खतरा नहीं है।”

अगले दिन लौरैन्स ने कैरौल से कहा कि वह उसको उसके हिस्से का पैसा दे दे क्योंकि वह देश विदेश घूमने जाना चाहता है। कैरौल ने उसके हिस्से का पैसा उसे दे दिया और लौरैन्स देश विदेश घूमने के लिये निकल पड़ा।

चलते चलते वह एक बड़े से शहर में पहुँचा। वहाँ वह एक डबल रोटी बनाने वाले के घर पहुँचा और खाने के लिये उससे डबल रोटी माँगी।

डबल रोटी वाला उससे बात करने लगा तो बातों बातों में उसने पूछा कि वह कहाँ जा रहा था। लौरैन्स बोला कि वह किसी ऐसी चीज़ की तलाश में था जो उसे डरा सके।

डबल रोटी वाले ने पूछा “क्या तुम्हारे पास काफी पैसा है?”

इस पर लौरैन्स बोला “हाँ मेरे पास 50 पौंड हैं।

डबल रोटी वाला बोला — “ठीक है मैं तुमको 50 पौंड और दूँगा अगर तुम मेरे बतायी हुई जगह पर चले जाओ तो।”

लौरैन्स बोला — “अगर वह जगह यहाँ से बहुत दूर नहीं है तो मैं तुम्हारी शर्त मान लेता हूँ।”

डबल रोटी बनाने वाला बोला — “ओह नहीं नहीं, वह तो यहाँ से एक मील दूर भी नहीं है। शाम होने तक तुम यहीं रहो। रात में तुम उस कब्रिस्तान में जाना। वहाँ पर एक पुराना चर्च है। निशानी के तौर पर तुम वहाँ से मुझको वहाँ रखा हुआ एक प्याला ला कर दे देना।”

डबल रोटी बनाने वाले ने जब यह शर्त उसके सामने रखी थी तब उसे पूरा विश्वास था कि शर्त वही जीतेगा क्योंकि उस कब्रिस्तान में एक भूत रहता था और वहाँ जो कोई भी जाने की कोशिश करता था वह भूत उसको मार डालता था।

रात हुई तो लौरैन्स अपनी तलवार ले कर उस कब्रिस्तान में पहुँचा। वह चर्च के दरवाजे तक पहुँच गया। अपनी तलवार की

नोक मार कर उसने चर्च का दरवाजा खोला। दरवाजा खुलते ही उसमें से लम्बे सींगों वाला एक बड़ा काला बकरा निकला।

लौरैन्स ने तुरन्त ही उस पर तलवार से वार किया तो बकरा तो भाग गया पर वह जगह उसके खून से लाल हो गयी। लौरैन्स अन्दर चला गया, उसने वहाँ रखा प्याला उठाया और ला कर डबल रोटी वाले को दे दिया।

इस तरह लौरैन्स शर्त जीत गया।

डबल रोटी वाले ने पूछा — “भाई, तुमने वहाँ कुछ देखा?”

लौरैन्स बोला — “हाँ, मुझे वहाँ पर एक बड़ा काला बकरा दिखायी दिया था। उसको मैंने तलवार से मारा तो बकरा तो भाग गया पर तलवार के वार से उसका काफी खून बह गया। इतना कि उसमें एक नाव तैर सकती थी। मुझे लगता है कि वह बकरा तो अब तक कभी का मर गया होगा।”

सबेरा होते ही डबल रोटी वाले ने काफी लोगों को इकट्ठा किया और चर्च की तरफ चला तो वहाँ वाकई काफी सारा खून पड़ा पाया। यह सब देख कर वह पादरी के पास पहुँचा और उसको बताया कि अब चर्च में काला बकरा नहीं है।

पादरी को तो विश्वास ही नहीं हुआ सो वह खुद चर्च गया और वहाँ जा कर देखा तो वास्तव में अब वहाँ कोई काला बकरा नहीं था सो वह तो बहुत ही खुश हो गया। क्योंकि जब भी वह वहाँ पूजा

क्रिया करता था वह काला बकरा आ कर उसकी पूजा की सारी चीजें इधर उधर कर दिया करता था।

आज उस पादरी ने निडर हो कर बिना किसी रोक टोक के पूजा की और लौरैन्स को खास आशीर्वाद दिया और साथ ही उसको 50 पौंड और भी दिये।

अगले दिन लौरैन्स फिर से अपने सफर पर निकल पड़ा। सारा दिन वह सफर करता रहा पर उसे कोई घर ही नहीं दिखायी पड़ा। आधी रात के समय वह एक सुनसान अकेली घाटी में आ गया। आसमान में पूरा चाँद खिला हुआ था। उसकी रोशनी पूरी घाटी में फैली पड़ी थी।

उसी रोशनी में उसने देखा कि एक जगह पर बहुत सारे लोग इकट्ठा हैं और वे दो आदमियों को भागते हुए देख रहे थे। इतने में उन दो आदमियों में से एक आदमी ने एक गेंद लौरैन्स की छाती में मारी।

लौरैन्स का हाथ तुरन्त ही अपनी छाती की तरफ चला गया ताकि वह उस गेंद को वहाँ से निकाल सके पर वहाँ तो गेंद नहीं थी बल्कि कुछ और ही था - वहाँ तो एक आदमी का सिर था।

लौरैन्स ने उस सिर को ही पकड़ लिया तो वह सिर चीखने लगा और बोला — “क्या तुमको मुझसे डर नहीं लग रहा है?”

लौरैन्स बोला — “नहीं, मुझे तुमसे डर क्यों लगेगा?” और लौरैन्स के ये शब्द बोलते ही वहाँ उसको दिखायी देने वाला सब

कुछ गायब हो गया और वह फिर से उस चाँदनी भरी घाटी में अकेला खड़ा रह गया।

चलते चलते वह एक दूसरे शहर में आया। वहाँ घूमते घूमते वह सड़क के किनारे बने एक बड़े से घर के सामने रुक गया। रात होने वाली थी सो वह रात को वहीं सोना चाहता था।

तभी एक नौजवान घर में से बाहर निकला और उससे पूछा —
“क्या चाहते हो भाई?”

लौरैन्स बोला — “मैं एक ऐसी चीज़ की तलाश में हूँ जिससे मैं डर जाऊँ।”

वह नौजवान बोला तब तुमको दूर जाने की जरूरत नहीं है।”
कह कर वह उसको अपने सामने वाले घर में ले गया और बोला — “देखो, इस मकान में नीचे एक तहखाना है। वहाँ जा कर तुम अपने लिये आग जला लो। मैं तुम्हें खूब सारा खाना पीना भेज देता हूँ। अगर तुम सुबह तक वहाँ रह गये तो मैं तुमको 50 पौंड दूँगा।”

लौरैन्स बोला “मैं तैयार हूँ।”

इतना कह कर लौरैन्स नीचे तहखाने में चला गया और वहाँ जा कर उसने आग जलायी। तभी एक लड़की उसके लिये खूब सारा खाना और शराब की बोतलें ले कर आ गयी। लौरैन्स ने आराम से खाना खाया और सोने के लिये लेट गया।

आधी रात के करीब वहाँ एक घोड़ा और साँड़ आ गये और आपस में लड़ने लगे। लौरैन्स ने कुछ नहीं कहा, बस वह केवल उनकी लड़ाई देखता रहा। जब वे लड़ते लड़ते थक गये तो वे चले गये। उधर लौरैन्स भी सो गया।

सुबह उस नौजवान ने ही आ कर उसे उठाया। उस नौजवान को लौरैन्स को ज़िन्दा देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसने पूछा — “क्या तुमने रात को यहाँ कुछ देखा?”

लौरैन्स बोला — “हाँ देखा था। एक घोड़ा और एक साँड़ आये और आपस में लड़ने लगे। वे करीब करीब दो घंटे तक लड़ते रहे फिर चले गये।”

उस नौजवान ने पूछा — “तुम डरे नहीं?”

लौरैन्स बोला “नहीं।”

वह नौजवान बोला — “अगर तुम आज रात को यहाँ और रुको तो मैं तुम्हें 50 पौंड और दूंगा।” लौरैन्स राजी हो गया।

रात 10 बजे लौरैन्स सोने की तैयारी कर रहा था कि वहाँ दो काले बकरे आये और आ कर लड़ने लगे। लौरैन्स आज भी उनकी लड़ाई केवल देखता रहा, कुछ किया नहीं। रात को 12 बजे के बाद वे भी चले गये।

अगले दिन उस नौजवान ने आ कर पूछा — “क्या कल रात तुम्हें कुछ दिखायी दिया?”

लौरैन्स बोला — “हाँ, कल रात यहाँ दो काले बकरे आये थे। वे भी लड़ते रहे और फिर चले गये।”

नौजवान ने पूछा — “तुम डरे नहीं?”

“नहीं तो।”

नौजवान बोला — “अच्छा, तो आज की रात तुम और रुको और मैं तुमको कल 50 पौंड और दूँगा।”

सो तीसरी रात जब लौरैन्स सोने की तैयारी कर रहा था तो एक बूढ़ा वहाँ आया। यह वही बूढ़ा था जो लौरैन्स के पास तब आया था जब वह अपनी माँ की कब्र की रखवाली कर रहा था और जिसने उसे खजाने की खोज में यात्रा पर भेजा था।

वह लौरैन्स से बोला — “तुम आयरलैंड के सबसे अच्छे आदमी हो। मुझे मरे हुए 20 साल हो गये तबसे आज तक मैं तुम्हारे जैसे आदमी की तलाश में हूँ।

आओ मैं तुमको खजाना दिखाता हूँ। तुम्हें याद है न? जब तुम अपनी माँ की कब्र की पहरेदारी कर रहे थे तब मैंने तुमसे कहा था कि एक बहुत बड़ा खजाना तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। आज वह समय आ गया है।”

वह लौरैन्स को और भी नीचे वाले तहखाने में ले गया और सोने से भरा एक बड़ा सा बरतन दिखाते हुए बोला — “यह सब खजाना तुम्हारा है अगर 20 पौंड तुम मेरी विधवा पत्नी मैरी को दे दोगे और उससे मेरी की हुई एक गलती की माफी माँग लोगे।

उसके बाद तुम यह घर खरीद लेना और मेरी बेटी से शादी कर लेना। फिर तुम ज़िन्दगी भर खुश और अमीर रहना।”

सबेरे वह नौजवान फिर आया और लौरैन्स से पूछा कि क्या उसने वहाँ रात में कुछ देखा था?

इस बार लौरैन्स बोला — “हाँ, देखा था और यह पक्की बात है कि इसमें हमेशा ही भूत रहेगा। पर दुनियाँ की कोई भी चीज़ मुझे किसी से भी नहीं डरा सकती। मैं यह घर और इसके चारों तरफ की जमीन खरीदना चाहता हूँ।”

नौजवान बोला — “मैं यह घर तो तुम्हें मुफ्त दे दूँगा पर इसके चारों तरफ की जमीन तुम्हें 1000 पौंड से कम में नहीं दूँगा और मुझे विश्वास है कि तुम्हारे पास इतने पैसे होंगे नहीं।”

लौरैन्स बोला — “मेरे पास इतना सारा पैसा है जिसका तुम्हें अन्दाजा भी नहीं है। मुझे मंजूर है।”

जब उस नौजवान को यह पता चला कि लौरैन्स इतना ज़्यादा अमीर है तो उसने लौरैन्स को अपने घर खाने की दावत दी। लौरैन्स उसके घर गया। वहाँ जब उस बूढ़े की लड़की ने उसको देखा तो वह उस पर मोहित हो गयी।

लौरैन्स फिर मैरी के घर गया। वहाँ उसने उसे 20 पौंड दिये और उस बूढ़े की गलती के लिये माफी माँगी।

फिर उसने उस नौजवान की बहिन के साथ शादी कर ली और खुशी खुशी रहने लगा। जितने दिन भी वह ज़िन्दा रहा कभी किसी से डरा नहीं।



3 छोटा निडर जौन⁹

भूतों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि इटली के एक शहर में एक बहुत ही निडर लड़का रहता था। उसका नाम था जौन। वह किसी से नहीं डरता था इसलिये सब उसको छोटा निडर जौन कह कर बुलाते थे।

एक बार उसको दुनियाँ देखने की इच्छा हुई तो उसने कुछ पैसे लिये और दुनियाँ देखने निकल पड़ा। चलते चलते वह एक सराय में आया और वहाँ आ कर उसने सराय के मालिक से खाना और रात भर रहने के लिये की जगह माँगी।

सराय का मालिक बोला — “आज तो पूरी सराय भरी हुई है। कोई जगह खाली नहीं है पर अगर तुमको डर न लगे तो मैं तुम्हें एक जगह ऐसी बता सकता हूँ जहाँ तुम आराम से ठहर सकते हो।”

छोटा निडर जौन बोला — “नहीं नहीं, मुझे डर नहीं लगता। मैं क्यों डरूँगा? तुम मुझे जगह बताओ।”

सराय का मालिक बोला — “लोग तो उस महल के बारे में सुन कर ही काँप जाते हैं क्योंकि वहाँ अभी तक जो भी गया वहाँ से

⁹ Dauntless Little John (Story No 1) – a folktale from Italy, Europe.

Adapted from the book “Italian Folktales” by Italo Calvino. 1956. Translated by George Martin in 1980.

ज़िन्दा वापस लौट कर नहीं आया। जो वहाँ बड़ी बहादुरी से रात गुजारने जाते हैं सुबह को वहाँ फ्रायर्स¹⁰ केवल उस आदमी की लाश लाने के लिये ही जाते हैं।”

जौन बोला — “कोई बात नहीं, मैं वहाँ जाऊँगा। तुम मुझे बस वह जगह बता दो कि वह जगह है कहाँ।”



सराय के मालिक ने उसको वह जगह बता दी और उसको एक लैम्प दे दिया। जौन ने उससे लैम्प लिया, पीने के लिये एक बोतल शराब ली और खाने के लिये एक

सौसेज¹¹ लिया और सीधा उस महल की तरफ चल दिया।

आधी रात को वह अपना खाना खाने के लिये खाने की मेज पर बैठा कि तभी उसने चिमनी से आती हुई एक आवाज सुनी — “क्या मैं इसे नीचे फेंक दूँ?”

जौन लापरवाही से बोला — “हाँ हाँ फेंक दो।”

तभी चिमनी में से अँगीठी के ऊपर एक आदमी की टॉग आ गिरी। जौन ने एक गिलास शराब पी। कुछ पल बाद वही आवाज फिर बोली — “क्या मैं इसे नीचे फेंक दूँ?”

¹⁰ Friars are the men of mendicant Christian religious order. They are different from monks as they take vow to live in poverty, chastity and obedience in service to society, rather for ascetism and devotion whereas monks live in self-sufficient community and work in a small area. Friars work among lay people of larger areas and subsist on donations and charity thus they roam around.”

¹¹ Sausage is usually made from ground meat with a skin around it – traditionally made in a casing of intestine – see its picture above.

जौन ने फिर उसी लापरवाही से जवाब दिया — “हाँ हाँ फेंक दो।” और एक और टॉग चिमनी में से अँगीठी के ऊपर आ गिरी।

इसी तरह से वह आवाज पूछती रही और जौन उसको उसी लापरवाही से कहता रहा — “हाँ हाँ फेंक दो।”

आखिर वहाँ दो टॉगें और दो हाथ आ कर गिर गये और फिर एक धड़। जैसे ही वह धड़ नीचे आ कर गिरा दोनों बाँहें और दोनों टॉगें उस धड़ से जुड़ गयीं और वहाँ एक बिना सिर वाला आदमी उठ कर खड़ा हो गया।

फिर एक और आवाज आयी — “क्या मैं इसे भी नीचे फेंक दूँ?” और जौन ने उसको फिर उसी लापरवाही से जवाब दिया — “हाँ हाँ इसे भी फेंक दो, तुमसे कहा न।”

फिर एक सिर नीचे आ गिरा। नीचे गिर कर वह सिर कूदा और उस बिना सिर वाले धड़ पर जा कर लग गया। वह तो अब सचमुच में ही एक बहुत बड़े साइज़ का आदमी¹² बन गया था।

जौन ने उसकी तरफ अपना शराब का गिलास उठा कर कहा — “तुम्हारी तन्दुरुस्ती के लिये।” और वह गिलास उसने एक ही साँस में खाली कर दिया।

वह बड़े साइज़ का आदमी बोला — “अपना लैम्प उठाओ और मेरे साथ आओ।”

¹² Translated for the word “Giant”

जौन ने अपना लैम्प तो उठाया पर वह वहाँ से हिला नहीं। इस पर वह आदमी बोला — “तुम आगे चलो।”

जौन बोला — “नहीं तुम आगे चलो।”

आदमी चिल्लाया — “मैं कहता हूँ कि तुम आगे चलो।”

जौन भी चिल्ला पड़ा — “तुम आगे चल कर मुझे रास्ता दिखाओ तभी तो मैं चलूँगा।”

इस पर वह बड़े साइज़ का आदमी आगे आगे चल दिया और जौन रास्ते पर रोशनी दिखाता हुआ उसके पीछे पीछे चल दिया।

वे लोग उस महल के कमरों पर कमरे पार करते चले गये। इस तरह उन दोनों ने करीब करीब पूरा महल पार कर लिया। आखीर में जा कर उनको नीचे जाने के लिये एक सीढ़ी मिली। वे लोग उस सीढ़ी से नीचे उतर गये। सीढ़ी के आखीर में एक दरवाजा था।

आदमी ने जौन से कहा — “इसे खोलो।”

जौन बोला — “तुम खोलो।”

सो उस आदमी ने अपने कन्धे के धक्के से वह दरवाजा खोला तो उसके अन्दर भी नीचे जाने के लिये एक घुमावदार सीढ़ियाँ थीं। वह आदमी बोला — “चलो नीचे चलो।”

जौन फिर बोला — “तुम आगे चलो।”

सो वह आदमी फिर आगे आगे चला और जौन उसके पीछे पीछे चला।

सीढ़ियाँ उतर कर वे दोनों एक तहखाने में आ गये। उस तहखाने में पत्थर का एक टुकड़ा रखा था। आदमी ने कहा — “इसे उठाओ।”

जौन बोला — “यह कोई छोटा सा पत्थर नहीं है जिसको मैं उठा सकूँ। तुम उठाओ।”

उस आदमी ने उस बड़े से पत्थर को ऐसे उठा लिया जैसे वह कोई बड़ा सा पत्थर न हो कर पत्थर की गोली हो। उस पत्थर के नीचे सोने से भरे तीन बरतन रखे थे।

वह आदमी बोला — “इन बरतनों को ऊपर ले चलो।”

जौन बोला — “तुम ले कर चलो।”

उस आदमी ने एक एक करके वे तीनों बरतन उठाये और उनको ऊपर ले गया। फिर वे दोनों उन तीनों बरतनों को ले कर उसी कमरे में आ गये जिसमें अँगीठी लगी हुई थी।

वह आदमी बोला — “ओ छोटे जौन, अब इसका जादू टूट गया।” यह कहने के बाद उस आदमी की पहले एक टॉग निकली और चिमनी से उड़ कर बाहर चली गयी।

वह बोला — “इसमें से एक बरतन तुम्हारा है।” फिर उसकी एक बाँह निकली और वह भी चिमनी से हो कर ऊपर चली गयी।

वह फिर बोला — “यह दूसरा बरतन उन फ़ायर्स का है जो यह सोचते हुए कल सुबह तुम्हारे मरे हुए शरीर को लेने आयेंगे कि तुम

मर गये।” यह कहने के बाद उसकी दूसरी बाँह भी चिमनी से उड़ कर ऊपर चली गयी।

वह फिर बोला — “यह तीसरा बरतन उस गरीब आदमी का है जो सबसे पहले यहाँ आयेगा।” इतना कहने के बाद उसकी दूसरी टाँग भी उड़ गयी और अब वह आदमी अपने धड़ पर बैठा रह गया।

वह फिर बोला — “यह महल तुम्हारा है तुम इसमें आराम से रहो।” यह कहने के बाद उसका धड़ भी उसके सिर से अलग हो कर चला गया।

अब केवल उसका सिर ही वहाँ रह गया। वह फिर बोला — “इस महल के मालिक और उनके बच्चे यहाँ से हमेशा के लिये चले गये हैं।” यह कह कर वह सिर भी चिमनी से हो कर बाहर निकल गया।



जब सुबह हुई तो बाहर शोर मचा। फ़ायर लोग यह सोच कर कि जौन तो अब तक

मर गया होगा उसके मरे हुए शरीर को रखने के लिये एक ताबूत¹³



ले कर आये थे पर वहाँ तो उन्होंने जौन को खिड़की पर खड़े हो कर अपना पाइप पीते देखा तो वे तो आश्चर्य में पड़ गये।

¹³ Translated for the word “Coffin” – see its picture above.

जौन ने उनको अपनी सारी कहानी सुना दी और उनको उनका सोने से भरा बरतन दे दिया। इस तरह जो फ़ायर्स जौन की लाश ले जाने आये थे वे सोने से भरा बरतन पा कर बहुत खुश हुए।

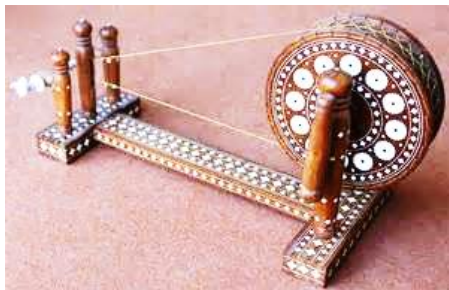
सोने से भरा वह तीसरा बरतन भी उस गरीब आदमी को दे दिया गया जो वहाँ सबसे पहले आया।

जौन उस महल में बहुत साल तक रहा और उस सोने को इस्तेमाल करता रहा। पर एक दिन उसने अपने पीछे देख लिया तो उसको अपनी परछाई दिखायी दे गयी। उसको देख कर वह इतना डर गया कि वहीं मर गया।



4 शापित रानी का महल¹⁴

भूतो की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश में कही सुनी जाती है।



यह बहुत पुरानी बात है कि इटली के एक शहर में एक बूढ़ी विधवा रहती थी। जो सूत कात कर अपना गुजारा करती थी।

उसके तीन बेटियाँ थीं। वे भी सूत कातती थीं। हालाँकि वे तीनों रात दिन अपने अपने चरखों पर लगी रहती फिर भी वे एक सैन्ट भी नहीं बचा पाती थीं क्योंकि उस कताई से वे केवल उतना ही कमा पाती थीं जिससे उनका रोज का खर्चा चल जाये।

एक दिन वह बुढ़िया बहुत बीमार हो गयी। उसको बहुत तेज़ बुखार आ गया और तीन दिन बाद तो वह बस मरने वाली ही हो गयी।

उसने अपनी तीनों रोती हुई बेटियों को बुलाया और कहा — “बेटी रोओ नहीं। कोई यहाँ हमेशा के लिये नहीं रहता। मैं तो काफी दिन ज़िन्दा रह कर अपनी काफी ज़िन्दगी जी चुकी। अब मेरा मरने का समय आ गया है।

¹⁴ The Palace of the Doomed Queen (Story No 93) – a folktale from Siena area, Italy, Europe.

Adapted from the book, “Italian Folktales”, by Italo Calvino”. Translated by George Martin in 1980.

मेरा दिल तो केवल इसलिये रोता है कि मैं तुम लोगों को इतना गरीब छोड़ कर जा रही हूँ। पर मुझे इस बात की खुशी है कि क्योंकि तुम लोग अपनी कमाई करना जानती हो इसलिये तुम लोग किसी तरह से अपने आपको सँभाल लोगी। कम से कम भूखी नहीं मरोगी। मैं भगवान से प्रार्थना करूँगी कि वह तुम्हारी सहायता करे।

जो कुछ दहेज में मैं तुम्हारे लिये छोड़ कर जा रही हूँ वह हैं ये तीन रुई के गोले। वे तीनों गोले आलमारी में रखे हैं।” यह कह कर उसने अपनी आखिरी साँस ली और इस दुनियाँ से चली गयी।

कुछ दिनों बाद वे तीनों लड़कियाँ आपस में बात कर रही थीं — “इस रविवार को ईस्टर रविवार है और हमारे पास एक अच्छे ईस्टर खाने के लिये कुछ भी नहीं है।”¹⁵

सो सबसे बड़ी वाली लड़की मैरी¹⁶ बोली — “मैं अपने धागे का गोला बेच दूँगी और उसके आये पैसे से ईस्टर के लिये खाना खरीदूँगी।”

ईस्टर की सुबह उसने अपने धागे का गोला उठाया और उसको बेचने के लिये बाजार चल दी। उसके हाथ का कता हुआ धागा बहुत बढ़िया था सो वह बहुत अच्छे दामों में बिक गया। उस पैसे से उसने डबल रोटी, बकरे की एक टाँग और एक बोतल शराब खरीदी और घर की तरफ चल दी।

¹⁵ Easter Sunday – the day Jesus was resurrected after his crucifixion on Friday (Good Friday),

¹⁶ Mary – name of the eldest girl

जब वह घर आ रही थी तो एक कुत्ता उसके पीछे दौड़ पड़ा। उसने उसके हाथ में लगी वह बकरे की टॉग और डबल रोटी तो मुँह में दबोच ली और शराब की बोतल नीचे गिरा दी।

नीचे गिरते ही वह बोतल तो टूट गयी और बकरे की टॉग और डबल रोटी ले कर वह कुत्ता वहाँ से भाग गया। वह लड़की तो डर के मारे हक्का बक्का सी रह गयी। वह तुरन्त ही वहाँ से घर भाग गयी।

जब वह घर आयी तो उसने अपनी बहिनों को बताया कि उस दिन उसके साथ क्या हुआ था। सो उस दिन उनको ब्राउन डबल रोटी के कुछ टुकड़े खा कर ही सन्तुष्ट रह जाना पड़ा।

अगले दिन बीच वाली लड़की रोज़¹⁷ बोली — “आज मैं देखती हूँ कि वह कुत्ता कैसे परेशान करता है?” सो उस दिन वह अपना सूत ले कर बाजार गयी।

उसका सूत भी अच्छा कता हुआ था सो उसको भी अपने सूत के बहुत अच्छे पैसे मिले। उसने भी अपने पैसे से बकरे का कुछ माँस, डबल रोटी और शराब की एक बोतल खरीदी और घर की तरफ चल दी।

इस लड़की ने मैरी के रास्ते को छोड़ कर अपने घर के लिये एक दूसरा ही रास्ता लिया। पर वह कुत्ता तो इस रास्ते पर भी उसके पीछे भागा। उसने इस लड़की का भी बकरे का माँस और

¹⁷ Rose – the name of the middle girl

डबल रोटी अपने मुँह में दबा ली और शराब की बोतल नीचे गिरा कर तोड़ दी और माँस और डबल रोटी ले कर भाग गया।

रोज़ मैरी से ज़्यादा हिम्मत वाली थी सो वह उस कुत्ते के पीछे भागी पर वह कुत्ता तो उससे कहीं तेज़ भाग रहा था सो वह उसका पीछा बहुत देर तक नहीं कर सकी और कुछ ही देर में थक कर वापस घर आ गयी। उसने भी हॉफते हॉफते अपनी बहिनों को बताया कि उस दिन उसके साथ क्या हुआ था।

उस दिन भी उन लोगों को ब्राउन डबल रोटी ही खानी पड़ी। उस दिन सबसे छोटी लड़की नीना¹⁸ बोली — “कल मेरी बारी है। कल मैं जाऊँगी और देखती हूँ कि वह कुत्ता मेरे साथ भी ऐसा ही करता है क्या।”

सो अगली सुबह नीना ने अपने सूत का गोला लिया और अपनी दोनों बहिनों के जाने के समय से बहुत पहले ही घर से बाजार के लिये निकल पड़ी।

वहाँ उसने भी अपना सूत बहुत अच्छे दामों पर बेचा और बहुत सारा खाने का सामान खरीदा और एक तीसरे रास्ते से घर की तरफ चल दी।

कुछ दूर चलने के बाद उसके पीछे भी एक कुत्ता आया। उसने भी नीना के हाथ में लगी शराब की बोतल गिरा कर तोड़ दी और बाकी का सामान ले कर भाग गया।

¹⁸ Nina – the name of the youngest girl

नीना उसके पीछे पीछे भागी और भागती ही रही। भागते भागते वह एक महल के पास आ गयी जहाँ आ कर वह कुत्ता गायब हो गया।

उसने सोचा कि अगर मुझे कोई इस महल के अन्दर मिलता है तो मैं उसको बताऊँगी कि एक कुत्ता तीन दिन से हमारा खाना लेकर भाग रहा है और फिर मैं उससे अपने खाने का बदला लूँगी।

यह सोच कर वह उस महल में अन्दर घुसी और उसके रसोईघर तक आ पहुँची। वहाँ आग जल रही थी और बरतनों में खाना पकाया जा रहा था।

एक जगह बकरे की टॉग भूनी जा रही थी। नीना ने एक बरतन का ढकना उठा कर उस बरतन में झाँका तो उसने देखा कि उसमें तो वही मॉस पक रहा था जो उसने अभी थोड़ी देर पहले ही खरीदा था और दूसरे बरतन में बकरे का मॉस था।

फिर उसने रसोईघर की एक आलमारी खोली तो देखा कि उसमें तीन डबल रोटियाँ रखी हुई थीं।

फिर वह महल देखने चली गयी। वह सारे महल में घूम ली पर आश्चर्य की बात कि उसको उस महल में एक भी आदमी दिखायी नहीं दिया। पर वहाँ खाने के कमरे में एक मेज पर तीन आदमियों के लिये खाना लगा था।

नीना ने अपने मन में सोचा “लगता है कि यह खाना तो केवल हमारे लिये ही लगा है और वह भी हमारे ही खरीदे हुए खाने से।

अगर मेरी बहिनें यहाँ होतीं तो मैं यहाँ अभी अभी खाना खाने बैठ जाती पर अब मैं क्या करूँ।”

उसी समय उसने सड़क पर जाती हुई एक गाड़ी की आवाज सुनी तो उसने खिड़की से बाहर देखा। उसने उस गाड़ी चलाने वाले को पहचान लिया।

उसने उस गाड़ीवान से कहा कि वह उसकी बहिनों से जा कर कह दे कि उनकी छोटी बहिन नीना यहाँ महल में उनका इन्तजार कर रही थी। उनके लिये यहाँ बहुत बढ़िया खाना लगा रखा है। सो वे तुरन्त ही यहाँ चली आयें।

उस गाड़ीवान ने उसकी बहिनों को जा कर नीना का सन्देश दिया तो वे दोनों वहीं आ गयीं। नीना ने उन दोनों को बताया कि उसके साथ क्या क्या हुआ।

फिर वह बोली — “चलो खाना खाते हैं। अगर इस घर के मालिक आ जाते हैं तो हम उनसे कह देंगे कि हम तो केवल अपना ही खाना खा रहे हैं।”

उसकी बहिनें उतनी बहादुर तो नहीं थीं जितनी नीना थी पर इस समय तक उनको भी भूख लग आयी थी सो वे सब वहाँ उस मेज पर खाना खाने बैठ गयीं।

अभी वे मेज पर बैठी ही थीं कि लड़कियों ने देखा कि अचानक बाहर अँधेरा हो आया था। उस महल की खिड़कियाँ बन्द होने लगीं और उसमें लगे लैम्प जलने लगे। वे अभी उनकी तारीफ ही कर

रही थीं कि उनका खाना अपने आप आ गया और मेज पर लग गया ।

नीना ने खाना खाने से पहले प्रार्थना की — “जो भी हमें हमारा यह खाना परस रहा है और जिसने हमें खाना बनाने से बचाया हम उसका धन्यवाद करते हैं ।”

फिर वह अपनी बहिनों से बोली “आओ बहिनों खाना शुरू करते हैं ।” और उन्होंने बकरे की टॉग खानी शुरू कर दी ।

नीना की बहिनें तो डर के मारे सुन्न सी हो गयी थीं । वे बड़ी मुश्किल से खाना खा पा रही थीं और वे सारी शाम एक दूसरे को ही देखती रहीं क्योंकि उनको लग रहा था कि वहाँ कभी भी कहीं से भी कोई भी बड़ा सा राक्षस आ सकता था ।

पर नीना बोली — “अगर वे हमको यहाँ खाना खिलाना नहीं चाहते थे तो वे हमारे लिये न तो खाना पकाते, न हमें खाना परसते और न ही हमारे लिये लैम्प जलाते ।” पर उसकी बहिनें उसके इस विचार से राजी नहीं थीं ।

खाना खाने के बाद जल्दी ही उनको नींद आने लगी तो नीना उनको महल में ले गयी । वहाँ वे सब एक ऐसे कमरे में आ गयीं जहाँ तीन बिस्तर लगे हुए थे सो नीना बोली “चलो सोया जाये ।”

उसकी बहिनें बोलीं — “नहीं नहीं । हम लोगों को अपने घर चलना चाहिये । यहाँ तो हमको बहुत डर लग रहा है ।”

नीना ने हँस कर कहा — “तुम लोग तो बहुत ही डरपोक हो। देखो न हम लोग यहाँ कितने आनन्द से हैं और तुम लोग यहाँ से जाना चाहती हो। मैं तो सोने जा रही हूँ तुमको अगर आना हो तो तुम भी आ जाना।”

वह उनको दोबारा सोने के लिये कहने ही वाली ही थी कि उन्होंने सीढ़ी के नीचे से एक आवाज सुनी — “नीना, मुझे ज़रा रोशनी तो दिखाना।”

यह सुन कर नीना की बहिनें तो डर के मारे जम सी गयीं — “हे भगवान हम पर दया करो। यह कौन हो सकता है? नीना, मत जाना वहाँ। पता नहीं कौन है वहाँ।”

नीना बोली — “मैं तो जाऊँगी।”

कह कर उसने एक लैम्प उठाया और सीढ़ियों से नीचे की तरफ जाने लगी। वह नीचे उतरी तो एक कमरे में आ गयी जिसमें एक रानी एक कुरसी पर जंजीरों से बँधी बैठी थी। उसके मुँह कान और नाक से लपटें निकल रही थीं।

रानी उन लपटों के बीच में से ही बोली — “सुनो नीना, क्या तुम अपनी किस्मत बनाना चाहोगी?”

“हाँ हाँ क्यों नहीं।”

“तब तुमको अपनी बहिनों की सहायता लेनी पड़ेगी।”

“मैं उनको बता दूँगी।”

रानी फिर बोली — “तुम लोगों को कुछ अजीब अजीब चीजें करनी पड़ेंगी और ध्यान रखना कि अगर तुम डर गयीं तो तुम मर जाओगी।”

नीना बोली — “मैं उनको वैसे कामों को करने के लिये किसी तरह से मना लूँगी जो उनको करने के लिये जरूरी होंगे।”

रानी फिर बोली — “बहुत अच्छे। तो देखो, वे तीन बक्से खोलो। उन सब में रानियों वाले कपड़े और गहने रखे हैं। मैं एक बार शहर के एक नौजवान से प्रेम करने लगी थी और उसी की वजह से मैं आज इस नरक में हूँ।

उसने जो भी कुछ मेरे साथ किया गलत किया। वह किसी दूसरी लड़की से शादी करना चाहता था। अब मैं यह चाहती हूँ कि वह भी मेरे साथ इस नरक को सहे। उसके साथ न्याय करने का यही एक तरीका है।

तुम कल मेरे कपड़े पहनना। अपने बाल भी वैसे ही बनाना जैसे मेरे बने हैं और हाथ में एक किताब ले कर बाहर छज्जे की दीवार के सहारे झुक कर खड़ी हो जाना।

एक निश्चित समय पर वह नौजवान यहाँ आयेगा और तुमसे पूछेगा — “भैम, क्या मैं आपके पास आ सकता हूँ?” तो तुम उसका जवाब देना “हाँ।”

और तब तुम उसको कौफी के लिये बुलाना और उसको जहर मिली कौफी का यह प्याला दे देना। जब वह मर जाये तो उसको

यहाँ नीचे ले आना। फिर यह आलमारी खोलना और उसको इस आलमारी के अन्दर फेंक देना। और फिर उसके चारों तरफ चार मोमबत्ती जला देना।

मैं बहुत अमीर थी। यह मेरी चीज़ों की लिस्ट है जिनको तुम मेरे नौकरों से ले सकती हो जो आज कल मेरी हर चीज़ चुराने पर लगे हैं।”

यह सुन कर नीना सीढ़ियों से ऊपर गयी और अपनी बहिनों को जा कर सब कुछ बताया कि उसने सीढ़ियों के नीचे क्या क्या देखा और बोली — “तुम लोग कसम खाओ कि तुम मेरी सहायता करोगी नहीं तो फिर भगवान ही तुम्हारी सहायता करे।”

उसकी दोनों बहिनों ने वायदा किया कि वे उसकी सहायता जरूर करेंगी।

अगली सुबह नीना उस मरी हुई रानी की तरह तैयार हुई और वहाँ जैसे रानी ने बताया था हाथ में किताब ले कर छज्जे की दीवार के सहारे झुक कर खड़ी हो गयी।

जल्दी ही उसको घोड़े की टापों की आवाज सुनायी पड़ी और एक नौजवान घोड़े पर सवार वहाँ आया। उसने नीना की तरफ देख कर उसको नमस्ते की। नीना ने भी अपना सिर हिला कर उसकी नमस्ते का जवाब दिया।

उस नौजवान ने पूछा — “क्या मैं आपके पास आ सकता हूँ मैम?”

नीना बोली — “यकीनन ।”

वह नौजवान अपने घोड़े पर से उतरा और महल की सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर आ गया ।

नीना ने कहा — “चलो, हम लोग साथ बैठ कर कौफी पीते हैं ।”

वह नौजवान बोला — “खुशी से ।”

नीना ने उसको एक प्याले में जहरीली कौफी डाल कर दे दी । वह नौजवान उस कौफी को पीते ही मर गया । नीना ने फिर अपनी दोनों बहिनों को बुलाया और उनसे कहा कि वह उसके शरीर को नीचे ले जाने में उसकी सहायता करें पर उन्होंने मना कर दिया ।

नीना बोली — “अगर तुम लोगों ने मेरी सहायता नहीं की तो मैं तुम लोगों को यहीं मार दूंगी ।”

इस पर वे डर गयीं और उस नौजवान के शरीर को नीचे ले जाने में नीना की सहायता करने में लग गयीं । नीना ने उस नौजवान का सिर पकड़ा और उसकी बहिनों ने उसके पैर और तीनों उसको खींचते हुए नीचे आलमारी के पास ले गयीं । उस आलमारी के चारों तरफ चार मोमबत्ती लगी हुई थीं ।

उसकी बहिनें तो यह सब देख कर काँपने लगीं और उस नौजवान के शरीर को वहीं छोड़ कर भागने ही वाली थीं कि नीना बोली — “तुम भाग कर तो देखो । फिर तुम देखना कि मैं तुम्हारे साथ क्या करती हूँ ।”

उसके बाद उसकी बहिनों की वहाँ से भागने की हिम्मत ही नहीं पड़ी।

नीना ने वह आलमारी खोली तो उसमें वह आग की लपट वाली रानी एक सोने के सिंहासन पर बैठी थी। उन्होंने उसके प्रेमी को उसके पास ही रख दिया।

रानी ने भी उसको हाथ से पकड़ कर अपने पास बिठा लिया और बोली — “आओ मेरे पास नरक में आओ, ओ नीच आदमी। अब तुम मुझे छोड़ कर कहीं नहीं जा सकोगे।”

इसके साथ ही वह आलमारी एक बहुत ज़ोर की आवाज के साथ झटके से बन्द हो गयी और गायब हो गयी।

यह सब देख कर नीना की बहिनें तो डर के मारे बेहोश सी हो गयीं। नीना उनको किसी तरह होश में लायी और उनको उस घटना के धक्के से बाहर निकाला।

फिर उन्होंने उस रानी का खजाना नौकरों से लिया और वे दुनियाँ की सबसे ज़्यादा अमीर लड़कियाँ हो गयीं।

कुछ साल बाद नीना की दोनों बहिनों की शादी हो गयी और उसने उनकी शादी में इतना अच्छा दहेज दिया जैसे किसी राजकुमारी की शादी में दिया जाता है। बाद में उसकी अपनी भी शादी हो गयी और वह भी एक रानी की तरह रही।



5 पानी का भूत और मछियारा¹⁹

दुनियाँ में भूतों की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के चीन देश की लोक कथाओं से ली है।

पानी के भूत चीन में हर नदी और समुद्र में रहते हैं। वे भूत उन बदकिस्मत आदमियों, मछियारों और मल्लाहों की आत्माएँ हैं जो या तो नदी या समुद्र में डूब गये थे या फिर उनके सबसे गहरे और काले पानी की तली में चले गये थे।

वे वहाँ तब तक रहते थे जब तक कि उनको कोई दूसरा आदमी ऐसा न मिल जाये जो वहाँ उनकी जगह ले ले।

जब किसी आदमी को या तो वे खुद मार लेते थे या फिर उनको खुद ही मरा हुआ कोई आदमी मिल जाता था तो वे भूत उस आदमी की जगह आदमी के रूप में पैदा हो जाते थे।

कुछ पानी के भूत किस्मत वाले होते थे क्योंकि उनके समुद्र इतने तूफानी और खतरनाक होते थे कि वहाँ लोग मरते ही रहते थे और इस तरह से वे भूत फिर से आदमी के रूप में पैदा होते ही रहते थे।

उनका यह नियम था कि जैसे ही कोई पानी का भूत किसी आदमी को मारता था और उसको पानी की तली में ले जाता था वह

¹⁹ The Water Ghost and the Fisherman – a folktale from China, Asia. Adapted from the book: “Chinese Myths and Legends”, translated by Kwok Man Ho. 2011. Its English version may be read at <https://www.scribd.com/doc/57934877/Chinese-Myths-and-Legends>

भूत फिर से एक नयी आत्मा के साथ आदमी के रूप में पैदा हो सकता था।

ऐसा ही पानी का एक भूत हुंग माओ पी²⁰ गाँव के पास से बहती हुई नदी के पानी में रहता था। वह वहाँ बहुत ही अकेला महसूस करता था। जहाँ तक उसको याद पड़ता था वह वहाँ का अकेला ही भूत था।

पर वह गाँव इतना छोटा था कि वहाँ के बहुत कम लोग उस नदी पर जाते थे। और जब भी वे जाते थे तो वह भूत हमेशा ही उनको खींच कर डुबोने का मौका खो देता था इसलिये वह कभी आदमी बन कर पैदा ही नहीं हो पा रहा था।

कई सालों से वह भूत फुंग ही²¹ को डुबोने का प्लान बना रहा था। फुंग ही उस गाँव का एक बहुत ही होशियार और हँसमुख मछियारा था और वह उस भूत के क्षेत्र में से हफ्ते में कम से कम चार बार तो गुजरता ही था।

पानी के उस भूत ने कई बार पानी में तूफान उठाये, उस मछियारे का जाल फाड़ दिया, उसकी नाव में छेद कर दिया पर फुंग मछियारा ही बहुत ही होशियार था और वह भूत उसको किसी भी तरह पकड़ नहीं पा रहा था।

²⁰ Hung Mao Pei – name of the Ghost

²¹ Fung Hei – name of the fisherman

एक दिन उसने उस मछियारे के जाल के आस पास की मछलियों को हटाने में दस घंटे खर्च किये ताकि वह उस मछियारे को रात को मछली पकड़ने पर मजबूर कर सके।

जैसे ही चॉद घने बादलों के पीछे छिपा पानी का भूत फुंग ही की नाव पर चढ़ गया और उसके किनारे के पास एक अँधेरे कोने में जा कर छिप कर बैठ गया। वहाँ बैठ कर वह उस मछियारे को मारने के समय का इन्तजार करने लगा।

उस समय फुंग ही चुपचाप पानी की तरफ देख रहा था। पानी के भूत ने सुना कि वह चुपचाप भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि वह उसको कम से कम कुछ मछलियाँ दे दे चाहे वह उसको थोड़ी सी ही मछलियाँ ही क्यों न दे पर दे दे।

फिर उस पानी के भूत ने देखा कि फुंग ही ने अपने लकड़ी के कटोरे में से अपने आखिरी चावल खा कर खत्म किये।

आखीर में पानी के भूत ने उसको पकड़ने की उम्मीद छोड़ दी और वह वहाँ से जाने ही वाला था कि तभी उसने देखा कि उसी समय वह मछियारा नदी में से अपना जाल समेटने के लिये अपनी नाव के एक तरफ को झुका।

बस उस भूत को मौका मिल गया और उसने फुंग ही को काले और अँधेरे पानी में धक्का दे दिया।

दो मिनट तो फुंग ही पानी के भूत की पकड़ से लड़ा पर फिर बेहोश हो गया। यह देख कर पानी का भूत बहुत खुश हुआ।

उसको लगा कि वह मछियारा मर गया और वह खुशी खुशी उस मछियारे के शरीर को नदी के किनारे खींच लाया।

वहाँ उसने नदी की कीचड़ उसके चेहरे पर मली और भूत की एक गोली उसकी जबान पर रख दी। उस मछियारे के शरीर को भूतों की दुनियाँ में ले जाने के लिये तैयार करने के बाद वह भूत अपने इस कारनामे को समुद्र के बादशाह येन लो वान²² को बताने के लिये वहाँ से जितनी तेज़ी से उड़ सकता था उड़ गया।

पर पानी के भूत ने अपनी कामयाबी का ज़रा ज़्यादा जल्दी ही अन्दाज लगा लिया क्योंकि वह मछियारा अभी मरा नहीं था वह तो अभी केवल बेहोश ही हुआ था। अपनी कामयाबी की खुशी में उत्सुक पानी के भूत को उसके दिल की धीमी धीमी धड़कन सुनायी ही नहीं दी।

वह मछियारा कुछ देर तक वहीं नदी के किनारे बिना हिले डुले पड़ा रहा और यह देखता रहा कि पानी का भूत वहाँ से गायब हो गया कि नहीं।

यह पक्का करने के बाद कि वह पानी का भूत वहाँ से चला गया उसने वह भूत की गोली अपने मुँह में से निकाल कर अपनी जेब में रख ली, अपने चेहरे की कीचड़ नदी के पानी से साफ की और अपने घर भाग गया। घर जा कर उसने अपने घर का दरवाजा बन्द कर लिया और जा कर सो गया।

²² Yen Lo Wan – the Emperor of the Sea

जब यह सब यहाँ धरती पर हो रहा था तो समुद्र का बादशाह येन लो वान उस पानी के भूत से उसके उस मछियारे के पकड़ने का हाल सुन रहा था।

मछियारे के पकड़ने का हाल सुना कर पानी का भूत अब समुद्र के बादशाह से प्रार्थना कर रहा था कि अब तो वह उसको आदमी के रूप में पैदा कर दे।



येन लो वान अपने शानदार सोने के सिंहासन से उठा, उसने पास में रखी मूँगे²³ की मेज पर से “जिन्दा और मुर्दा लोगों की किताब”²⁴ उठायी और उसके पन्ने पलट कर उस पन्ने पर गया जहाँ समुद्र में अभी अभी मरे हुए लोगों के नाम लिखे थे।

²³ Coral – Coral is normally found in tropical seas throughout the world. It is basically a limestone formation or reefs. It comes in many colors. It gets its color from the algae it hosts – see its picture above.

²⁴ Book of the Living and Dead

काफी देर तक इधर उधर देखने के बाद भी उसको उस किताब में उस मछियारे का नाम नहीं मिला जिसके मारने का जिक्र वह पानी का भूत कर रहा था।

यह देख कर येन लो वान ने पानी के उस भूत से पूछा —
“क्या तुमको पूरा यकीन है कि वह मछियारा मर गया था?”

पानी का भूत परेशान सा जोर से चिल्लाया — “हाँ मुझे पूरा यकीन है कि वह मछियारा मर गया था। धरती का कोई भी आदमी आप के पानी में तीन मिनट से ज़्यादा ज़िन्दा कैसे रह सकता है?”

समुद्र का बादशाह गरजा — “तुम्हें पता है कि यह तुम मेरे पास आज किसी मरे हुए की कहानी ले कर चौथी बार आये हो और आज फिर तुम बेवकूफ बन गये हो।

वह मछियारा अभी मरा नहीं है। मेरे लिखने वाले इस किताब में नाम लिखने में गलती नहीं कर सकते।

जाओ जल्दी नदी में वापस चले जाओ और इससे पहले कि तुम हमेशा के लिये आदमी बन कर जीने का मौका खो बैठो उस आदमी के मुँह में से वह भूत की गोली वापस निकाल लो।”



समुद्र के बादशाह ने अपने केंकड़े²⁵ चौकीदारों को बुलवाया और उनसे कहा कि वे उस दुखी पानी के भूत को धरती तक

²⁵ Translated for the word “Crab” – see its picture above.

वापस ले जायें ताकि वह उस मछियारे के मुँह में से भूत वाली गोली निकाल सके।

राजा का हुकुम मान कर वे उसको धरती तक छोड़ आये।

वहाँ से वह पानी का भूत नदी के किनारे तक दौड़ा गया जहाँ उसने उस मछियारे के शरीर को छोड़ा था पर वहाँ तो केवल उसके शरीर का निशान ही मौजूद था और कुछ नहीं। मछियारा तो वहाँ से गायब हो चुका था।

बदकिस्मत पानी का भूत उस मछियारे को ढूँढने को लिये पागलों की तरह से गाँव का घर घर झाँकता रहा – कभी उन घरों की खिड़कियों में से तो कभी उन घरों में बनी झिरियों में से।

फिर कभी वह उनका दरवाजा खटखटाता और जैसे ही घर का मालिक दरवाजा खोलता तो उस मछियारे को न पा कर वह वहाँ से गायब हो जाता।

आधी रात से पहले पहले वह एक घंटे तक ऐसे ही उस मछियारे को ढूँढता रहा पर वह उसको कहीं नहीं मिला। आखीर में उसको उस मछियारे का लकड़ी का बना घर मिल ही गया।

वह उस मछियारे के घर का दरवाजा तब तक खटखटाता रहा जब तक कि वह अपने बिस्तर से उठ कर यह देखने पर मजबूर नहीं हो गया कि वहाँ क्या हो रहा था।

आधे सोते हुए मछियारे ने अपने दरवाजे को बहुत थोड़ा सा खोल कर उसमें से बाहर झाँका पर बाहर बहुत अँधेरा था इसलिये उसको कुछ दिखायी नहीं दिया।

उसने दरवाजा थोड़ा सा और खोला ताकि वह अपने घर के आगे बने छोटे से बरामदे को ठीक से देख सके। वहाँ उसने देखा कि लकड़ी के एक लट्टे के सहारे खड़ा खड़ा पानी का भूत सिसक रहा था।

पानी के भूत ने सिसकते सिसकते ही मछियारे से प्रार्थना की — “मेरे मछियारे भाई, तुम कम से कम मुझे मेरी वह भूत की गोली तो वापस कर दो जो मैंने तुम्हारे मुँह में रखी थी नहीं तो मैं फिर कभी इस धरती पर नहीं आ पाऊँगा।”

मछियारे को उस भूत पर दया आ गयी। वह तुरन्त ही घर के अन्दर दौड़ गया और वह कीमती भूत की गोली ले कर वापस आ गया।

पर वह उस गोली को केवल इस शर्त पर लौटाने के लिये तैयार था कि वह भूत उसका मछली का जाल हमेशा ही मछलियों से भर दिया करेगा।

भूत को उसकी यह शर्त माननी पड़ी। मछियारे ने उस भूत की गोली उसको लौटा दी और वह भूत उससे वह गोली ले कर वहाँ से वापस चला गया।

उस दिन के बाद से तो उस मछियारे की मछलियों का शिकार दस गुना बढ़ गया। अब तो अक्सर ही उसकी नाव मछलियों से इतनी ज़्यादा भरी रहती कि उसको हमेशा ही यह लगता रहता कि वह नदी के किनारे तक सुरक्षित पहुँच भी पायेगा या नहीं।

पहले तो वह पानी का भूत जब मछलियाँ उस मछियारे की तरफ धकेलता तो वह पानी की सतह के ठीक नीचे ही रहता पर बाद में फिर वह मछियारे से बात करने के लिये पानी की सतह के ऊपर भी दिखायी देने लगा।

जल्दी ही दोनों अच्छे दोस्त बन गये। उनकी पहली मुलाकात के ठीक एक महीने के बाद एक दिन मछियारे ने पानी के भूत को अपने घर शाम के खाने के लिये बुलाया।

अब दोनों को एक दूसरे का साथ इतना अच्छा लगने लगा कि वे मछियारे के घर में खाना खाने के लिये हफ्ते में दो बार मिलने लगे।

एक दिन सुबह सुबह पानी का भूत मछियारे के घर आया और उसका हाथ पकड़ कर बोला — “मुझे तुम्हें यह बताते हुए बहुत अफसोस हो रहा है दोस्त पर अब मुझे तुम्हें छोड़ना पड़ेगा।”

मछियारा आश्चर्य से बोला — “क्यों? क्या हुआ?”

पानी का भूत खुश हो कर बोला — “आज शाम को एक बुढ़िया उस कीचड़ वाली नदी के किनारे आयेगी और अगर मैं वहाँ

उसको एक हल्का सा भी धक्का दूँगा तो वह नदी के पानी में गिर जायेगी और गहरे पानी में डूब जायेगी।

यह मेरी किस्मत बदलने के लिये बहुत ही अच्छा मौका है। तुम मेरे बहुत ही अच्छे दोस्त रहे हो। मुझे तुमको छोड़ते हुए बहुत दुख हो रहा है पर मेरे पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं है।”

मछियारा चिल्लाया — “एक मिनट, एक मिनट। मुझे मालूम है कि तुम्हारे लिये इस आत्मा की दुनियाँ से बाहर निकलना कितना जरूरी है पर तुम एक भोली भाली बुढ़िया को इस तरह से नहीं मार सकते।

तुम उसको इतनी दर्दनाक मौत कैसे दे सकते हो और फिर मुझे मछली पकड़ने में कौन सहायता करेगा? तुम्हारे बिना तो मैं ज़िन्दा भी कैसे रहूँगा?”

कई महीनों से साथ साथ रहते पानी का भूत अब अपने नये दोस्त मछियारे की बहुत परवाह करने लगा था सो वह मछियारे की मेज पर बैठ गया और इस समस्या का कुछ हल सोचने लगा। दोनों दोस्त बहुत देर तक चुपचाप बैठे रहे।

आखिर पानी का भूत मछियारे की बात मानता हुआ बोला — “ठीक है। मैं अपना यह काम तीन साल के लिये रोक देता हूँ।”

और इस वायदे के अनुसार तीन साल तक उस नदी में फिर कोई नहीं डूबा। वे दोनों रोज झील के किनारे मिलते, अक्सर

मछियारे के घर साथ साथ खाना खाते और त्यौहारों पर तो अक्सर वह पानी का भूत मछियारे के घर में ही रह जाता।

पर फिर एक दिन ऐसा आया जब पानी के भूत ने एक तैराक को डुबोने का विचार किया और मछियारे के यह बात बतायी पर एक बार फिर उसको मछियारे की बात माननी पड़ी।

एक दिन वह पानी का भूत मछियारे से फिर बोला — “कल एक जवान लड़का नदी में तैरने जायेगा और मैं उसको नदी की तली में डुबो दूँगा। और सुन लो इस बार तुम मुझे नहीं रोकोगे क्योंकि मैं इस नदी में हमेशा के लिये नहीं रह सकता।”

इस बार मछियारा कुछ नहीं बोला। वह दुखी हो कर फर्श की तरफ देखता रहा और अपना सिर हिलाता रहा। पानी का भूत यह सब उससे कह कर वहाँ से चला गया।



अगले दिन मछियारा रोज की तरह से अपनी नाव ले कर नदी के बीच में गया।

जैसे ही वह अपना मछली पकड़ने वाला जाल नदी में डाल रहा था कि उसने एक लड़के को नदी किनारे रस्सी कूदते हुए देखा तो उसने अपना जाल तो छोड़ दिया और

अपनी नाव की पतवार पकड़ कर उसे किनारे की तरफ ले चला जहाँ वह लड़का पानी में घुसने की कोशिश कर रहा था।

मछियारा वहीं से चिल्लाया — “ए लड़के, तुम अभी अभी अपने घर चले जाओ। तुम्हारी माँ तुमको बुला रही है। अगर तुम अभी अभी घर नहीं गये तो वह तुमको आलसी होने के लिये बहुत मारेगी।”

लड़का यह सुन कर डर गया और अपने घर भाग गया। इधर मछियारा भी सन्तुष्ट हो कर अपना जाल देखने के लिये वापस लौट आया।

उस शाम को पानी का भूत जब मछियारे के घर आया तो बहुत नाराज था पर मछियारे को उसकी इस बात का पता था सो उसने उसके शाम के खाने के लिये बहुत स्वाददार मछली और माँस पका कर मेज पर सजा रखा था।

जैसे ही पानी का भूत उसके घर में घुसा तो मछियारे ने उससे माफी माँगते हुए कहा — “मुझे मालूम है मेरे दोस्त कि तुम मुझसे गुस्सा हो पर ज़रा सोचो उस लड़के के आगे तो अभी पूरी ज़िन्दगी पड़ी है और तुम उसको अभी से मार देना चाहते थे।”

मछियारा आगे बोला — “देखो तुम मुझे इलजाम मत देना पर अब मैं तुम्हारे कामों में बिल्कुल भी दखल नहीं दूँगा।”

मछियारे के शब्दों से सन्तुष्ट होते हुए और खाने के लालच में वह पानी का भूत वहीं खाना खाने बैठ गया। इसके बाद यह मामला फिर हमेशा के लिये बन्द हो गया।

फिर कुछ साल बीत गये। दोनों की दोस्ती चलती रही। पर एक दिन फिर जब पानी का भूत मछियारे के घर खाना खा रहा था तो भूत का धीरज फिर से छूट गया और वह मछियारे से बोला कि अब उसके नदी छोड़ने का समय आ गया था।

बहुत ही भारी दिल से उसने मछियारे को अपना प्लान बताया। वह बोला — “तुमको मालूम है कि मैं तुम्हारी बहुत परवाह करता हूँ पर ज़रा तुम अपनी ज़िन्दगी से मेरी इस भूतिया ज़िन्दगी की जो मैं नदी की तली में बिताता हूँ तुलना तो करो। जब तक मैं अपनी सहायता अपने आप नहीं करूँगा मैं हमेशा के लिये यहीं पड़ा रह जाऊँगा।

और जब तुम मर जाओगे तो मेरा इस दुनियाँ में कोई भी दोस्त नहीं रह जायेगा इसलिये मुझे अपने आपको बचाने के लिये कुछ न कुछ तो करना ही चाहिये।

मैंने सुना है कि तुम्हारी पड़ोसन चाँग शान²⁶ अपने पति से बहुत झगड़ा करती है। और मुझे ऐसा पता चला है कि कल वह नदी में डूब कर आत्महत्या करने वाली है।

इस तरह से इस बार मैं किसी को मार नहीं रहा बल्कि वह अपने आप ही मरने जा रही है। इसलिये इस बार तुम मुझको इलजाम नहीं दे सकते। और हाँ देखो मेरे इस काम में कोई रोक टोक भी मत लगाना।”

²⁶ Chang Shan – the name of the fisherman’s neighbor

यह खबर सुन कर तो मछियारा सकते में आ गया। उसको तो इस बात का पता ही नहीं था। हालाँकि उसने पानी के भूत के मामलों में दखल न देने का वायदा किया था पर फिर भी उसने मन ही मन चाँग शान की सहायता करने का फैसला कर लिया।

उस रात मछियारे को रात भर नींद नहीं आयी। वह अपने आगे के प्लान के बारे में ही सोचता रहा कि उसे क्या करना है। सुबह उसने निश्चय किया कि वह अपनी दोस्ती को दाँव पर लगा कर भी उस स्त्री को बचायेगा।



मछियारा सुबह को नहाया भी नहीं, उसने कुछ खाया भी नहीं और अपने बालों में कंघी भी नहीं की। बस तुरन्त ही कपड़े पहन कर वह नदी की तरफ चल दिया।

वह बस समय से ही नदी पर पहुँच पाया क्योंकि चाँग शान तभी तभी नदी के भँवर में कूदी थी। यह देख कर वह खुद भी उसके पीछे पीछे नदी में कूद गया।

भँवर की तेज़ लहरें दोनों को नदी की तली की तरफ ले गयीं। मछियारे ने उस स्त्री को पकड़ तो लिया पर वह बेहोश हो गयी थी। फिर भी उसने उसको और खुद को बाहर निकालने में अपनी पूरी ताकत लगा दी।

पानी का भूत देखता रहा पर उसने दोनों को न तो बचाने की कोई कोशिश की और न ही मारने की कोशिश की। वह बस अपनी किस्मत का इन्तजार करता रहा। कुछ देर बाद मछियारा चाँग शान को बाहर ले कर आ गया और उसको उसके पति के पास छोड़ आया।

उस रात भूत ने मछियारे का दरवाजा खटखटाया। बिना किसी जवाब की उम्मीद के पानी का भूत अन्दर आया और रसोईघर की मेज पर बिना कुछ बोले बैठ गया।

मछियारे ने उसको अपनी कुछ सफाई देनी चाही पर पानी के भूत ने उसको कुछ भी कहने से पहले ही रोक दिया।

वह बोला — “मैं यहाँ तुमको कुछ कहने या तुम्हारे ऊपर चिल्लाने नहीं आया हूँ। मुझे मालूम है कि तुमने उस स्त्री को क्यों बचाया और मुझे यह भी मालूम है कि तुमने यह इरादा ऐसे ही नहीं किया होगा।

मुझे यह भी मालूम है कि तुम मेरी कितनी परवाह करते हो पर साथ में तुम आदमियों की ज़िन्दगियों की भी परवाह करते हो। इसी लिये मैं वायदा करता हूँ कि मैं खुद अब किसी को नहीं मारूँगा।

वे अपने आप ही मरें तो मरें। जो कुछ मुझे भगवान ने दिया है मैं उसी को स्वीकार करता हूँ।”

मछियारे ने जब पानी के भूत के ये शब्द सुने तो उसको लगा कि जितने भी दोस्त उसने अपनी ज़िन्दगी में बनाये थे उन सबमें यह भूत उसका सबसे अच्छा दोस्त था।

इस घटना के बाद पानी के भूत और मछियारे दोनों ने बहुत सारा समय खाने पीने, ताश खेलने, मछली पकड़ने में बिता दिया। उनकी पहली मुलाकात से आज तक दस साल गुजर गये थे और पानी के भूत ने किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया।

इस बीच समुद्र के बादशाह के महल में येन लो वान अपनी सारे लोगों पर ठीक से नजर रखे था। उसके दूसरे भूत और आत्माएँ बदकिस्मत लोगों को डुबो देते थे और उनकी जगह आदमी बन जाते थे जबकि उसका यह पानी का भूत हुंग माओ पाई अपने क्षेत्र में आने वाले किसी भी आदमी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता था।

उस पानी के भूत ने बड़ी नम्रता से अपनी किस्मत को ही स्वीकार कर लिया था। इसको देख कर जेड बादशाह को भी आश्चर्य होता था।

यह देख कर उसने अपने महल में अपनी काउन्सिल बुलायी जहाँ समुद्र के बादशाह येन लो वान ने जेड बादशाह से पानी के भूत की तरक्की की सिफारिश की तो जेड बादशाह ने पानी के भूत को ज़िला देवता चेंग हुआंग²⁷ के पद पर तरक्की करने का फैसला किया और उसको वह पद दे दिया।

²⁷ Cheng Huang god, the District god

पतझड़ के मौसम की एक शाम को जब पानी का भूत मछियारे के घर जाने के लिये नदी की गहराइयों से ऊपर उठा तो उसको जेड बादशाह का वज़ीर²⁸ सामने ही मिल गया। उसके हाथ में उसकी तरक्की का कागज था।

वह तरक्की देख कर पानी का भूत बहुत खुश हुआ और अपनी खुशी छिपा न सका। वह अपनी तरक्की का कागज ले कर तुरन्त ही मछियारे के घर की तरफ दौड़ गया।

पर मछियारा तब तक बाजार से नहीं लौटा था और पानी का भूत अपना समय बरबाद नहीं करना चाहता था सो उसने उसके लिये अपने नये घर में आने के लिये एक न्यौता छोड़ा और अपना ऊँचा ओहदा लेने के लिये वहाँ से उड़ गया।

जब मछियारा बाजार से लौटा तो उसने अपने घर में पानी के भूत का वह न्यौता पाया तो उसको विश्वास हो गया कि इस देवता को जरूर ही कुछ गलतफहमी हो गयी है।

काफी दिनों तक मछियारा यह तय नहीं कर पाया कि वह क्या करे – कि वह जाये या नहीं जाये। पर क्योंकि न्यौते का दिन पास आ रहा था इसलिये उसको कुछ तो निश्चय करना ही था सो उसने वह न्यौता स्वीकार करने का निश्चय किया।

²⁸ Translated for the word "Prime Minister".

एक बात और भी थी कि जिस दिन से मछियारे ने वह न्यौता अपने रसोईघर की मेज पर पाया था तब से ले कर आज तक उसने पानी के भूत को नहीं देखा था।

वह रोज नदी के किनारे पर भी जाता और उसको नदी के गहरे पानी में पुकारता पर उसे कोई जवाब ही नहीं मिलता। वह रोज उसका इन्तजार करता कि वह उसके घर का दरवाजा खटखटायेगा पर वैसा भी कभी नहीं हुआ।

दिन पर दिन मछियारे के शिकार की मछलियों की गिनती कम होती जा रही थीं पर यह सब उसके लिये अपने दोस्त को खोने के सामने कुछ नहीं था।

फिर वह दिन भी आया जब मछियारे को चेंग हुआंग के मन्दिर जाना था। वह वहाँ पहुँचा पर वहाँ की तो जमीन और मन्दिर दोनों ही खाली पड़े थे। शाम हो चली थी और मन्दिर के खम्भों और पेड़ों की पत्तियों के बीच हल्की हवा बह निकली थी।

मछियारा अपनी यात्रा से थक गया था सो उसने मन्दिर के सामने पड़ी एक पत्थर की बैन्च पर पड़ी पत्तियाँ साफ की, उस पर अपनी सूती जैकेट बिछायी और आराम करने के लिये लेट गया। थका था इसलिये लेटते ही सो गया।

सपने में उसने अपने दोस्त पानी के भूत को चेंग हुआंग के कपड़े पहने देखा। उसका दोस्त उसके पास आया और उसने उसको

एक सोने की प्लेट दी जिसमें खुशबूदार मॉस रखा हुआ था और एक बहुत ही मुश्किल से मिलने वाली मछली रखी हुई थी।

वह पानी का भूत उसके पास चुपचाप खड़ा रहा और वह मछियारा खाना खाता रहा। जब मछियारे का खाना खत्म हो गया तो पानी के भूत ने सोने के सिक्कों से भरा एक भारी थैला उसकी गोद में रख दिया।

फिर उसके सामने झुक कर बोला — “मेरे अच्छे दोस्त, अगर तुम मेरे दोस्त न होते तो मैंने अब तक बहुत सारे लोग मार दिये होते।

पर तुमने मुझे उस पाप से बचा लिया और अब मैं तुम्हारे सामने तुमको धन्यवाद देने के लिये अपना सिर झुकाता हूँ। अब तुम मुझे कभी नहीं देख पाओगे पर तुम हमेशा मेरे ख्यालों में रहोगे।” और उसके बाद वह पानी का भूत मछियारे के सपने में से चला गया।

जब मछियारे की आँख खुली तो दिन निकल रहा था। जैसे ही वह अपनी जैकेट उठाने के लिये और मन्दिर से जाने के लिये बैन्च से उठा एक भारी सा सोने से भरा थैला उसकी गोद से नीचे जमीन पर गिर पड़ा।

मछियारा उस थैले को ले कर घर चला गया और सोचने लगा कि वह केवल उसका सपना ही नहीं था बल्कि उसने सच में ही अपने भूत दोस्त को देखा था।

उसने अपने दोस्त के दिये हुए पैसे को बड़ी अक्लमन्दी से खर्च किया और एक बहुत ही अमीर व्यापारी बन गया। उस दिन के बाद वह उस नदी में कभी मछली पकड़ने नहीं गया और न ही कभी कोई वहाँ डूबा।

पर उस दिन के बाद से वह रोज उस नदी के किनारे जरूर जाता और चेंग हुआंग देवता की प्रार्थना करता।



6 ज़ोर से बोलने वाली स्त्री²⁹

भूतों की यह कथा भी एशिया महाद्वीप के चीन देश में कही सुनी जाती है। यह एक मजे की बात है कि कैसे एक ज़ोर से बोलने वाली स्त्री ने अपने आपको भूतों से बचाया और उनकी दुनियाँ में खलबली मचा दी।

यह लोक कथा भी बहुत मजे की हँसी की लोक कथा है। लो तुम भी पढ़ो यह कथा और हँसो।

नरक का देवता³⁰ उन सब भूतों की देख भाल करता था जो नरक में रहते थे। पर यह काम उसके लिये बड़ा अजीब सा काम था क्योंकि उसको यहाँ कोई खास काम नहीं था और उसको समय बिताना भी बहुत मुश्किल था।

वह अक्सर खाली ही रहता था क्योंकि नरक ठंडा और अँधेरा था और वहाँ कोई कोई कभी कभी ही आता था।

एक दिन वह नरक का देवता मरे हुए लोगों के जज³¹ के पास गया और उससे उसने प्रार्थना की कि वह और ज़्यादा लोगों को भूत में बदले ताकि वहाँ उसके लिये कुछ काम तो हो और उसका समय भी ठीक से बीते।

²⁹ The Loud Mouthed Woman – a folktale from China, Asia. Adapted from the book:

“Chinese Myths and Legends” translated by Kwok Man Ho. 2011. Its English version may be read at <https://www.scribd.com/doc/57934877/Chinese-Myths-and-Legends>

³⁰ God of Hell

³¹ Judge of Dead

सो मरे हुए लोगों के जज ने नरक के देवता की बात मानी और उसने एक बहुत ही चालाक भूत को धरती पर भेजा और उससे कहा कि वह जितने लोगों को भी मार सके उतने लोगों को मार कर नरक भेज दे।

चालाक भूत ने उसका हुकूम माना और लोगों को भूत बनाने के लिये धरती की तरफ चल दिया।

जब वह चालाक भूत धरती पर पहुँचा तो वह सबसे पहले एक खेत पर गया जो एक वोंग फू³² नाम की स्त्री का था। वहाँ वह रसोईघर में अपना खाना बना रही थी।

जब वह खाना बना रही थी तो वह भूत उसके मुर्गीखाने में घुस गया और उसकी सारी मुर्गियों को उसमें से निकाल निकाल कर बाहर उड़ा दिया। जब वोंग फू ने देखा कि उसकी सारी मुर्गियाँ खेत में चारों तरफ उड़ गयीं तो वह उनका पीछा करने के लिये उनके पीछे पीछे भागी।

पर मुर्गियाँ तो अब आजाद थीं और अपनी आजादी कौन छोड़ता है सो वे भी उस भूत की सहायता से वोंग फू से एक कदम आगे ही भागती रहीं। पीछा करते करते वोंग फू बहुत थक गयी और दिल का दौरा पड़ जाने की वजह से गिर कर मर गयी।

³² Wong Fu – name of a Chinese woman

वह भूत उस स्त्री को उठा कर मरे हुए लोगों के जज के पास ले आया और मरे हुए लोगों के जज ने उसको वहाँ से नरक भेज दिया।

वह भूत फिर धरती पर वापस लौट गया और अबकी बार वह एक अमीर आदमी के घर पहुँचा। वह आदमी रोज तीसरे पहर को अपने पैसे गिना करता था। वह भूत जा कर उसके पास बैठ गया और उसने उसके सोने चाँदी के सिक्के खिड़की से बाहर सड़क पर जाने वालों के सिर पर फेंकने शुरू कर दिये।

उस अमीर आदमी ने उन सिक्कों को पकड़ने की बहुत कोशिश की पर वे उसके हाथ से ऐसे फिसल जाते थे जैसे तेल लगी मछली। इस तरह से उसके पास से सारा पैसा चला गया।

जब उसके हाथ से सारा पैसा चला गया तो वह बहुत दुखी होकर अपना दिल पकड़ कर कुरसी में बैठ गया। उसको भी दिल का दौरा पड़ गया था और वह भी वहीं कुरसी में बैठे बैठे मर गया तो वह भूत उसको भी नरक ले गया।

वह चालाक भूत अब अपनी सफलता पर बहुत खुश हुआ और अब जहाँ भी उसको मौका लगा उसने और दूसरे लोगों को भी तंग करना और डराना जारी रखा।

कभी कभी तो उसको केवल अपना काला बदसूरत चेहरा और बड़े बड़े पीले दाँत ही दिखाने की जरूरत पड़ती और लोग उनको देखते ही मर जाते। इस तरह एक हफ्ते में तो नरक के कमरों में

बहुत सारे भूत भर गये और नरक के देवता के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी।

इससे पहले कि यह चालाक भूत वापस नरक लौटता इस भूत की सफलता को देख कर इसको कुछ और लोग लाने के लिये एक हफ्ता और दिया गया। यह देख कर इस भूत ने इस हफ्ते में पिछले हफ्ते से भी ज़्यादा लोगों को मारने का इरादा किया।

एक सुबह जब वह गाँवों में से हो कर गुजर रहा था तो उसको गरम गरम चर्बी बनाने की खुशबू आयी। वह उस खुशबू के पीछे पीछे चल दिया तो एक रसोईघर में आया जहाँ एक स्त्री अपने परिवार के लिये दोपहर का खाना बना रही थी।

वह स्त्री लम्बी, मजबूत और अच्छी हड्डियों वाली थी। गाँव भर में वह ज़ोर से बोलने वाली स्त्री के नाम से जानी जाती थी।

जब भूत ने देखा कि वह स्त्री उस चर्बी को एक मिट्टी के बरतन में पलटने वाली थी तो वह उधर उसका एक घूँट पीने के लिये दौड़ा। पर उसके वहाँ पहुँचने से पहले ही उसने वह बरतन बन्द कर दिया था।

गुस्से में आ कर उसने अपना पैर पटका और अपने आपसे ही बोला — “उँह यह तो बहुत ही मतलबी ज़ोर से बोलने वाली स्त्री है। सजा के तौर पर मैं इसके चेहरे पर गरम तेल छिड़कने वाला हूँ जिससे यह जल कर मर जायेगी।”

जैसे ही वह भूत तेल का एक लोटा उसके चेहरे पर छिड़कने के लिये तैयार हुआ कि एक लड़का दौड़ता हुआ उस घर में घुसा। उस लड़के के चेहरे पर बहुत सारी कीचड़ लगी हुई थी।

उसको देख कर वह स्त्री चिल्लायी — “ज़रा अपना यह गन्दा काला चेहरा तो देख। मैंने तुझसे हजारों बार कहा है कि तू कीचड़ में न खेला कर पर तू है कि सुनता ही नहीं।”



बच्चा यह सुन कर रोने लगा तो स्त्री थोड़ी मुलायम पड़ गयी और हँसते हुए बोली — “चल यहाँ बैठ। मैं अभी तेरे नहाने के लिये पानी गरम करती हूँ। गरम पानी से नहा कर तेरा सारा शरीर साफ हो जायेगा।”

जब भूत ने यह सुना तो उसने सोचा शायद वह स्त्री यह सब उसी से कह रही है। तो वह तो यह सुन कर डर के मारे काँपने लगा।

वह पानी से ज़्यादा किसी और चीज़ से नहीं डरता था सो उसने उस स्त्री की तरफ दोबारा देखा भी नहीं और अपने हाथ में लिया हुआ तेल का लोटा नीचे रखा और नरक की तरफ भाग लिया।

हॉफते हुए उसने मरे हुए लोगों के जज को उस स्त्री के बारे में बताया जो उसको गरम पानी में उबालने वाली थी। जज ने धीरज से उसकी बात सुनी और उसको आराम करने के लिये नरक भेज दिया।

जज ने सोचा कि वह इस ज़ोर से बोलने वाली स्त्री को खुद जा कर देखेगा कि वह वाकई वह स्त्री इतनी खतरनाक है या नहीं जितना खतरनाक कि वह भूत उसको बता रहा था।

जब मरे हुए लोगों का जज उस स्त्री के घर पहुँचा तो उसने अपने आप को एक लकड़ी के लठ्ठे के रूप में बदल लिया और उसके घर की देहरी³³ पर जा कर लेट गया।

वहाँ से उसने उस स्त्री को उसके नाम से बुलाया तो वह स्त्री अन्दर से बाहर दौड़ी आयी। पर जैसे ही वह अपने दरवाजे पर आयी तो वहाँ लकड़ी का एक लठ्ठा देख कर अचानक रुक गयी और ज़ोर से बोली कि यह लकड़ी का लठ्ठा वहाँ दरवाजे पर किसने डाला।

पर वहाँ उसकी बात का जवाब देने वाला तो कोई था नहीं सो उसने अपने पति को बुलाया। उसकी कड़कती आवाज सुन कर तो वह मरने वालों का जज भी कौंप गया। उसका पति बेचारा तुरन्त ही उसकी पुकार पर दौड़ा चला आया।

उसने अपने पति से कहा — “इस लकड़ी को तुरन्त ही काट दो ताकि हम इसको आज के रात का खाना बनाने के लिये इस्तेमाल कर सकें।” कह कर उसने पैर मार कर उस लठ्ठे को एक तरफ को हटा दिया और रसोईघर में चली गयी।

³³ The line between the inside and the outside of the house – translated for the “threshold of the front door”.

यह सुन कर उसका पति भी तुरन्त ही एक कुल्हाड़ी लाने के लिये अन्दर चला गया। पति के जाने के बाद मरे हुए लोगों का जज तुरन्त ही अपने असली रूप में आ गया और अपने घायल शरीर को सहलाने लगा।

इससे पहले कि वह स्त्री उसको फिर से मारती वह उड़ कर अपने नरक भाग गया जहाँ जा कर उसने अपनी कहानी नरक के देवता को सुनायी।

नरक के देवता ने इस स्त्री के बारे में अपने चालाक भूत के मुँह से पहले से ही बहुत कुछ सुन रखा था। और अब इस मरे हुए लोगों के जज के मुँह से उसकी कहानी सुन कर तो उसको बहुत ही आनन्द आया कि उस जज को भी उससे परेशानी हुई।

नरक के देवता ने मरे हुए हुए लोगों के जज से कहा — “मुझे पता नहीं कि तुम्हारे दिमाग में क्या घुस गया है पर तुम्हारी रिपोर्ट से तो ऐसा लगता है कि जैसे इस स्त्री के तीन सिर हैं और छह बाँहें हैं।

मुझे लगता है कि इस स्त्री को मुझे खुद ही देखना पड़ेगा। मुझे यकीन है कि मैं उसको एक ही दिन में नरक ले आऊँगा।” और यह सोच कर नरक का देवता खुद ही धरती की तरफ चल दिया।

जब वह धरती पर पहुँचा तो शाम हो चुकी थी। उसने अपने आपको एक साये में बदल लिया ताकि वह उस जोर से बोलने वाली स्त्री के घर में चुपचाप घुस सके।

उस समय सारा परिवार शाम के खाने के लिये इकट्ठा हुआ था सो वह एक सुरक्षित जगह ढूँढने लगा जहाँ वह आराम से छिप सके ।



वहीं रसोईघर के एक कोने में घोंघों³⁴ से भरा एक मिट्टी का बरतन रखा था सो नरक के देवता ने अपने आपको एक मोटे से घोंघे में बदला और

जा कर उस घोंघों वाले बरतन में बैठ गया ।

वहाँ बैठे बैठे वह यह सोचता रहा कि वह उस स्त्री को कैसे मारेगा । तभी उसने उस स्त्री को अपने बेटे से यह कहते हुए सुना कि वह उसको उस मिट्टी के बरतन में से एक कटोरा मोटे वाले घोंघे ला कर दे ।

लड़का उठा और उसने माटे मोटे घोंघे ढूँढने के लिये उस मिट्टी के बरतन में अपना हाथ डाल दिया और वह उसमें से मोटे मोटे घोंघे ढूँढने लगा । उस बच्चे के हाथ उसके शरीर से कई बार छुए तो वह पास पड़े घोंघों के नीचे और नीचे घुसता गया ।

आखिर उस बच्चे ने कुछ घोंघे उठाये और वहाँ से चला गया और वह नरक का देवता अपने आपको खुशकिस्मत समझते हुए कि मैं बच गया उड़ कर वहाँ से अपने घर नरक चला गया ।

³⁴ Translated for the word "Snails" – see its picture above.

जब नरक के देवता ने उस चालाक भूत और मरे हुए लोगों के जज को उस स्त्री के बारे में बताया तब भी उसकी साँस ठीक से नहीं आ रही थी और वह काँप रहा था।

वह बोला — “अब मुझे पता चला कि तुम लोगों का क्या मतलब था। मुझे लगता है कि मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ कि मैं वहाँ से बच कर आ गया हूँ। मुझे लगता है कि वह इस तरह की स्त्री नहीं है इसलिये हमें उसे छोड़ देना चाहिये।”

मरे हुए लोगों का जज तो इस बात पर राजी हो गया पर वह चालाक भूत उस ज़ोर से बोलने वाली स्त्री को मारने पर तुला हुआ था।

उसको लगा कि जब तक वह उसको मार नहीं लेगा उसको चैन नहीं मिलेगा सो जब उसे कोई नहीं देख रहा था तो वह वहाँ से धरती पर जाने के लिये खिसक गया और उस स्त्री के घर पहुँच गया।

अबकी बार वहाँ जा कर उसने उस स्त्री के बदकिस्मत पति को पकड़ लिया और घसीट कर उसको लकड़ी के एक कमरे में बन्द कर दिया।

फिर वह उसके पति की शक्ल में आ गया और अपनी उसी शक्ल में वह उस स्त्री के पलंग पर जा कर लेट गया। उसने सोचा कि वह स्त्री अभी सोने आयेगी तब वह उसे देख लेगा।

पलंग पर लेट कर वह उसकी पत्नी का इन्तजार करने लगा। वह वहाँ बहुत देर तक इन्तजार करता रहा पर वह स्त्री वहाँ नहीं आयी।

बहुत देर तक इन्तजार करने के बाद भी जब वह स्त्री अपने सोने के कमरे में नहीं आयी तो उसे उसको ढूँढने के लिये मजबूरन उस कमरे के बाहर जाना पड़ा।

ढूँढते ढूँढते वह उसको रसोईघर में मिली। उसने देखा कि वह रसोईघर में अपने पैर धो रही थी। वह उसको देख कर बहुत खुश हुआ और दबे पाँव उसके पीछे जा कर उसके कन्धे पर अपना हाथ रख दिया।

फिर वह अपनी सबसे ज़्यादा मीठी आवाज में बोला — “लाओ मैं तुम्हारे पैर धो दूँ। सारा दिन काम करते करते तुम थक गयी होगी। मैं तुम्हारे शरीर में तेल भी लगा दूँगा ताकि तुम्हारी खाल चिकनी हो जाये।”

उस भूत ने महसूस किया कि उस स्त्री के कन्धे काँप रहे थे। तो बजाय इसके कि वह मुस्कुरा कर पीछे को तरफ घूमती उसने पानी की बालटी उठायी और घूम कर उस भूत के ऊपर उस बालटी का पानी डाल दिया। फिर वह रसोईघर का दरवाजा ज़ोर से बन्द करती हुई रसोईघर से बाहर निकल गयी।

पानी के शरीर पर पडते ही उस भूत ने एक ज़ोर की चीख मारी क्योंकि उस पानी से उसका शरीर पिघलने लगा था।

नरक के देवता ने उसकी वह चीख सुन ली और तुरन्त ही उसने उस भूत को नरक लाने के लिये दो और भूत धरती पर भेज दिये। वे दो भूत उस चालाक भूत को उठा कर नरक ले आये।

जब वह कुछ सँभला तो नरक के देवता ने उसको और दूसरे भूतों को बुला कर एक मीटिंग की। उस मीटिंग में उसने कहा — “बस बहुत हो गया। अब तुम लोग उस स्त्री को छोड़ दो। मुझे उसकी आवाज अब बिल्कुल भी नहीं सुननी।

और उसके जैसी अगर कोई दूसरी स्त्रियाँ हैं भी तो भी तुम लोगों के लिये अब सबसे अच्छा तो यही है कि तुम लोग आदमियों की दुनियाँ ही छोड़ दो।”

सब भूत इस बात पर राजी हो गये और बस उसके बाद भूतों और मरे हुए लोगों के जज ने लोगों को फिर कभी परेशान नहीं किया।

7 चूहों की शादी³⁵

भूतों की यह दंत कथा एशिया महाद्वीप के चीन देश की दंत कथाओं से ली गयी है। इसमें ताओ धर्म का एक पुजारी एक आदमी के घर से भूत भगाता है।

एक बार की बात है कि मिंग साम्राज्य के दिनों में यू पहाड़ पर चुई ली पुल के पास वाह चीयू परिवार³⁶ एक बहुत बड़े घर में रहता था।

एक बार एक नये साल की शाम³⁷ को घर के मालिक ने अपने घर के एक ऐसे कमरे से खुशी की कुछ चीखों की आवाजें सुनी जो बरसों से बन्द था।

वह तुरन्त उधर गया और जा कर उस कमरे का जंग लगा दरवाजा जितनी आहिस्ता से खोल सकता था उतनी आहिस्ता से खोला और धीरे से उसके अन्दर घुसा।



वहाँ का दृश्य देख कर तो उसको अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसने देखा कि दूर एक कोने में एक बहुत बड़ा काला चूहा

³⁵ Rats' Wedding – a folktale from China, Asia. Adapted from the book:

“Chinese Myths and Legends” translated by Kwok Man Ho. 2011. Its English version may be read at <https://www.scribd.com/doc/57934877/Chinese-Myths-and-Legends>

³⁶ The Wah Chiyu family lived in a very large house near Chui Li Bridge on Yu Mountain during the period of Ming Dynasty (1368-1644 AD) – 276 years.

³⁷ Eve of 31st December is called New Year's Eve.

गाने बजाने वाले, नौकरों और बरात के जुलूस के आगे आगे चल रहा था।

उस बड़े चूहे के पीछे छह छोटे चूहे एक एक बाजा ले कर नाच रहे थे और दुलहा काला टोप लगाये जिसमें एक सुनहरी फूल लगा था छोटे से घोड़े पर सवार था। उसके दोनों तरफ चार चार चूहे छोटी छोटी भूरे रंग की घोड़ियों पर सवार हो कर चल रहे थे।



घर का मालिक यह देख कर तो और ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गया जब उसने देखा कि आठ आदमी दुलहिन की कुरसी ले कर जा रहे थे और वे आठों आदमी केवल एक एक फुट लम्बे ही थे।

उन सबके पीछे आँखों में आँसू भरे एक बूढ़ा सीडान कुरसी पर बैठा जा रहा था जिसको दो चूहे उठा कर ले जा रहे थे। बरात के इस जुलूस ने उस घर के मालिक के सामने ही कमरे में एक चक्कर काटा और फिर कमरे के दूर वाले कोने में लकड़ी की बनी एक दरार में गायब हो गये।

उन चूहों के गायब हो जाने के बाद घर का मालिक वहाँ से वापस लौट आया पर उसने अपने घर वालों से इस बारे में इस डर से कुछ नहीं कहा कि कहीं उसके घर वाले यह न समझें कि वह इन सब चीजों को केवल सोच ही रहा था। वे सचमुच में नहीं घटी थीं।

अगली रात वह फिर वहाँ गया और वहाँ उसने फिर से वे चूहे देखे। उस दिन वे शादी की दावत शुरू करने जा रहे थे।

इस तरह अगले आठ दिन तक वह बराबर उस कमरे में रोज जाता रहा और वहाँ चूहों की शादी के मनाने के तरीके देखता रहा।

दसवीं रात तो उनके नाच से सारा कमरा हिल रहा था क्योंकि वे अमावस्या³⁸ के आने का त्यौहार मना रहे थे। इसके अगले दस दिन तक उस बूढ़े चूहे ने जो सीडान कुरसी में बैठा था एक टीचर बुलाया जो उसके नये दामाद³⁹ को लिखना और हिसाब किताब रखना सिखाये।

बीस दिन तक यह सब छिपे छिपे देखने के बाद घर के मालिक से नहीं रहा गया और उसने अपने घर वालों को वह सब बता दिया जो उसने अब तक देखा था। पर किसी ने उसका विश्वास ही नहीं किया।

सो 21वें दिन वह उन सबको यह दिखाने के लिये उस कमरे तक ले गया जहाँ यह सब हो रहा था पर वहाँ तो कोई भी नहीं था। वे सारे चूहे और छोटे आदमी गायब हो गये थे।

हालाँकि वह उस कमरे में अगले कुछ हफ्तों तक बराबर जाता रहा पर वह कमरा हमेशा ही खाली रहा और उसका परिवार यह

³⁸ Translated for the word "New Moon"

³⁹ Translated for the word "Son-in-law" – daughter's husband

सोचता रहा कि वह नये साल की खुशियों के मनाने के बाद में अपने आप ही कुछ कुछ देख रहा था।

उसके बाद फिर कुछ महीने गुजर गये। एक दिन घर का मालिक अपने घर के सामने के दरवाजे के बाहर बैठा था और अपने पड़ोसियों को माहजोंग⁴⁰ खेल खेलते और बात करते देख रहा था कि उधर से एक ताओ पुजारी⁴¹ निकला।

वह पुजारी उसके घर के सामने रुक गया और उसके घर की तरफ देख कर उससे बोला — “तुम्हारे घर में एक बहुत ही ताकतवर बुरी आत्मा है और मैं उस आत्मा को तुम्हारे घर में से बाहर निकालने में सहायता कर सकता हूँ।”

घर के मालिक को उस पुजारी की बातों पर विश्वास हो गया और उसने उसको घर में बुला लिया। पुजारी को उस कमरे का रास्ता दिखाने की जरूरत ही नहीं पड़ी। वह अपने आप ही घर के ऊपर बने उस कमरे में चला गया जहाँ चूहों की शादी हो रही थी।

वहाँ पहुँच कर उसने अपनी कमर की पेटी से लटकी एक लम्बी तलवार निकाली जिसके चारों तरफ सिक्के लगे हुए थे। उसने वह तलवार अपने मुँह के सामने रखी और उसको छत की तरफ करके उसमें एक फूँक मारी।

⁴⁰ Mahjong game – a Chinese puzzle game played by four people

⁴¹ Tao priest – Tao is a Chinese religious practice

उसकी फूँक की हवा एक घने धुँए के रूप में ऊपर उठी। उस धुँए ने फट कर घर के देवता को प्रगट किया। उन देवता ने घर के एक कोने की तरफ इशारा किया और गायब हो गये।

जैसे ही वह देवता गायब हुए तो उस कोने की तरफ से वे छोटे आदमी दीवार में से प्रगट हो गये जो उन चूहों के जुलूस में थे और आ कर फर्श पर गिर पड़े।

इससे पहले कि वे आदमी होश में आते पुजारी ने उनके दिलों में अपनी तलवार घुसा कर उनको पकड़ लिया। बाद में घर के नौकरों को उनके शरीरों को और लकड़ी के फर्श से उनका खून साफ करने के लिये बुलाया गया।

घर के मालिक ने पुजारी के सामने इज्जत से सिर झुकाया और उससे पूछा कि वह उस काम के लिये उसको क्या दे।

पुजारी बोला — “तुमको तो मालूम ही है कि मैं ताओ का पुजारी हूँ और मैं दूसरों की सहायता करने के बदले में कुछ नहीं लेता पर क्योंकि मैंने तुम्हारे घर की बुरी आत्मा को निकालने के लिये अपनी सहायता के लिये तुम्हारे घर के देवता को बुलाया था। और मुझे यह भी मालूम है कि उनको धन्यवाद देने के लिये खाने और शराब की जरूरत पड़ेगी।”

घर के मालिक ने हाँ में सिर हिलाया। पर जब वह पुजारी चला गया तो वह सोचता रहा कि उस पुजारी के कहने का क्या मतलब था। क्योंकि उस पुजारी की यह माँग कुछ अजीब सी थी क्योंकि

घर के देवता का तो काम ही यह था कि वह घर की बुरी आत्मा को घर में से निकालने में सहायता करे फिर उनको कुछ क्यों देना ।

और यह सबको मालूम था कि उनको किसी चीज़ की जरूरत होती नहीं थी । इसके अलावा कोई ताओ पुजारी दूसरे देवता की तरफ से भी कुछ नहीं माँगते थे । यही सोच कर उसने उस पुजारी की माँग पर कोई ध्यान नहीं दिया और अपने घर के देवता को ऐसे ही छोड़ दिया ।

पर जैसे ही उसने ऐसा सोचा कि एक गुस्से भरी आवाज घर में गूँज गयी — “मैंने तुम्हारे घर में से एक बुरी आत्मा को बाहर निकालने में तुम्हारी सहायता की और तुम घर के उस देवता के साथ कंजूसी का बरताव कर रहे हो जिसने तुम्हारी सहायता की । मैं तुमको शाप देता हूँ कि तुम्हारा परिवार कभी भी शान्ति से नहीं रह पायेगा । ”

जब घर के मालिक ने यह धमकी सुनी तो उसको विश्वास हो गया कि ताओ पुजारी के रूप में वह एक शैतान था । पर अब तो अपने परिवार की किस्मत बदलने के लिये उसको बहुत देर हो चुकी थी ।

उस दिन के बाद से उसके घर में बहुत सारे चूहे इधर उधर घूमने लगे । वे मेज कुरसियों के चारों तरफ घूमते, परिवार के कपड़े खाते और उस घर के भंडारघरों में रखी चीज़ें खराब करते ।

हालाँकि उन्होंने घर की हर चीज़ को आलमारी और डिब्बों में बन्द करके रखने की कोशिश की पर उनकी कोई भी तरकीब उन चूहों को उनकी किसी भी चीज़ को बरबाद करने से नहीं रोक सका। जैसे ही नौकर पहले का सब कूड़ा साफ करते चूहे फिर वापस आ जाते और फिर से चीज़ों को बरबाद करने में लग जाते।

दो हफ्ते की इस बरबादी के बाद उस परिवार ने अपना घर छोड़ दिया। वे चाँग तीन शी से मिलने के लिये किआंगसी⁴² चले गये। चाँग तीन शी उस समय का चीन का सबसे अच्छा ताओ पुजारी था। उसने जब घर के मालिक की कहानी सुनी तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ।

वह खुद अपने कुछ शिष्यों को साथ ले कर वाह चीयू के परिवार के साथ उन चूहों को देखने के लिये उसके घर चल दिया।

जब वाह चीयू का परिवार अपने घर में नहीं था तो वहाँ तो हर कमरे में चूहों ने खूब ऊधम मचाया हुआ था पर जब उनको लगा कि एक बहुत ताकतवर ताओ पुजारी आ रहा है तो वे एक दूसरे के ऊपर गिरते पड़ते वहाँ से छिपने के लिये भाग गये।

चूहों के शाप को नष्ट करने के लिये चाँग तीन शी पुजारी ने पहले घर की रक्षा के लिये पाँच डंडे घर के चारों तरफ गाड़े। फिर अपनी जामुनी पोशाक से टोटकों का एक थैला निकाला और उन

⁴² They went to Kiangsi to see Chang Tien Shih

टोटकों को घर के मालिक को दे कर उन्हें उन डंडों के ऊपर रखने के लिये कहा ।

उसके बाद वह अकेला ही घर के उस कमरे में गया जिसमें घर के मालिक ने चूहों की शादी देखी थी ।



उसने खूवानी⁴³ की लकड़ी का एक टुकड़ा निकाला जिस पर कुछ लिखा हुआ था और उससे उस झिरी को बन्द कर दिया जिसमें नये साल की शाम को चूहे गायब हो गये थे ।

उसके बाद उसने खूवानी की लकड़ी की ही दो तलवारें निकालीं और उनको भी वहीं उसी झिरी के सामने गाड़ दिया । जब वह यह सब कर रहा था तो वह साथ में कुछ पढ़ता भी जा रहा था ।

जब उसकी यह रस्म पूरी हो गयी तो वह वाह चीयू के परिवार और अपने शिष्यों के पास आया । वहाँ वाह चीयू के परिवार ने उसकी खातिरदारी की और फिर वे सब ताओ पुजारी लोग किआंग्सी वापस चले गये ।

महीनों बाद वह वाह चीयू परिवार उस घर में शान्ति से सोया । पर पाँच दिन बाद परिवार को हर कमरे में से बदबू आने लगी । यहाँ तक कि वह बदबू उनके कपड़ों में भी बस गयी थी । उस बदबू से सब लोग बहुत परेशान थे ।

⁴³ Translated for the word "Peach". It is a fruit – see its picture above.

घर का मालिक डर गया। उसको लगा कि शायद चूहे फिर से आ गये हैं। वह घर के ऊपर वाले कमरे में देखने गया जहाँ कि वह बदबू सबसे ज़्यादा तेज़ थी।

उसने अपने नौकरों को वह खूबानी की लकड़ी की डाट⁴⁴ जो वह पुजारी लगा कर गये थे तोड़ने के लिये और फिर उस छेद में घुसने के लिये कहा।

पर वह बदबू इतनी तेज़ थी कि उसके कुछ नौकर तो उस छेद में घुसने से पहले ही बेहोश हो गये। पर जो उस छेद में घुस पाये वे खुशी से चिल्ला पड़े।

चाँग तीन शी के टोटकों और खूबानी की लकड़ी के टुकड़ों ने सब चूहों को मार डाला था। असल में वह बदबू उन्हीं मरे हुए चूहों की थी।

सबसे पहले हटाये जाने वाले चूहों में वे दो बहुत बड़े बड़े चूहे थे जिन्होंने वाह चीयू के घर को शापित किया था।

उस दिन के बाद से जो भी यू पहाड़ के आस पास और यॉंगट्ज़ी नदी⁴⁵ के उत्तर और दक्षिण में रहता है वह शादी के मौके पर शादी की भेंटों के रूप में नमक और चावल घर के हर कोने में रखता है। और वह नये साल की शाम को भी जल्दी सोने चला जाता है ताकि वहाँ चूहे आजादी से आनन्द मना सकें।

⁴⁴ Translated for the word "Seal"

⁴⁵ Yangtzi River – a famous and the longest river of China Asia and the third longest river of the world after Nile of Africa and Amazon of South America, called also "Yellw River" and "the Sorrow of China"

चीन के दूसरे हिस्सों में भी नये साल के मनाने के समय एक दिन होता है जिस दिन रात में घर में चूहे आजादी से घूमने दिये जाते हैं और खाने पीने दिये जाते हैं कि ताकि आने वाले साल में परिवार आराम और शान्ति से रह सके ।



8 भूत ब्राह्मण⁴⁶

भूतों की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक गरीब ब्राह्मण था जो बहुत कुलीन घराने का नहीं था सो उसको शादी करने में बहुत मुश्किल हो रही थी। वह कई अमीर लोगों के पास गया और उनसे पैसा देने की भीख माँगी ताकि वह किसी लड़की से शादी कर सके।

उसको काफी पैसे की जरूरत थी। यह पैसा केवल उसको शादी के लिये ही नहीं चाहिये था बल्कि लड़की के माता पिता को देने के लिये भी चाहिये था।

वह बेचारा दर दर भीख माँगता घूम रहा था। बहुत सारे अमीर लोगों की चापलूसी कर रहा था। आखिर उसने धीरे धीरे करके कुछ पैसे इकट्ठे कर लिये। फिर उसने शादी की और अपनी पत्नी को अपनी माँ के पास अपने घर ले कर आया।

कुछ समय बाद उसने अपनी माँ से कहा — “माँ मेरे पास तुम्हें और अपनी पत्नी को खिलाने पिलाने के लिये कुछ भी नहीं है। इसलिये मुझे पैसा कमाने के लिये किसी दूर देश में जाना चाहिये।

⁴⁶ The Ghost Brahman (Tale No 12) – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site :

https://en.wikisource.org/wiki/Folk-tales_of_Bengal/The_Ghost-Brahman

Adapted from the book: “Folk-tales of Bengal”, by Lal Behari Dey. London, Macmillan & Co Limited. 1912. 1st ed 1883. 22 Tales. This book is available at the above Web Site.

हो सकता है कि मुझे वहाँ सालों लग जायें। क्योंकि मैं तब तक वापस नहीं आऊँगा जब तक मैं काफी पैसा न कमा लूँ।

इस बीच जो कुछ भी मेरे पास है वह मैं तुमको दे कर जाता हूँ तुम उसको सँभाल कर खर्च करना और मेरी पत्नी का खयाल रखना।”

माँ ने दुखी मन से उसको जाने की इजाजत दी और आशीर्वाद दे कर विदा किया। माँ से आशीर्वाद ले कर वह ब्राह्मण अपनी यात्रा पर चल दिया।

उसी शाम एक भूत ने उस ब्राह्मण का रूप रखा और उसके घर आया। ब्राह्मण की पत्नी ने सोचा कि उसका पति वापस आ गया सो उसने उससे पूछा — “अरे तुम इतनी जल्दी वापस कैसे आ गये? तुम तो कह रहे थे कि तुमको तो शायद कई साल लग जायेंगे। फिर तुमने अपना विचार क्यों बदल दिया?”

भूत बोला — “आज का दिन जाने के लिये ठीक नहीं था इसी लिये मैं वापस आ गया। इसके अलावा मुझे कुछ पैसे भी मिल गये थे। अब मैं बाद में जाऊँगा।”

माँ को कोई शक नहीं हुआ कि वह उसका बेटा नहीं था। सो वह भूत उस घर में ऐसे रहता रहा जैसे वही उस घर का मालिक हो। वही उस स्त्री का बेटा हो और वही उस नौजवान स्त्री का पति हो।

क्योंकि वह भूत ब्राह्मण और असली ब्राह्मण दोनों इतने एक जैसे लगते थे जैसे दो मटर के दाने तो पड़ोसियों ने भी सोचा कि वह असली ब्राह्मण है।

कुछ साल बाद असली ब्राह्मण अपनी यात्रा से वापस लौटा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने अपने जैसे एक आदमी को अपने घर में देखा।

भूत ब्राह्मण ने असली ब्राह्मण से पूछा — “तुम कौन हो और तुम मेरे घर में क्यों आये हो?”

असली ब्राह्मण बोला — “तुमने क्या कहा कि मैं कौन हूँ? पहले मैं यह तो जान लूँ कि तुम कौन हो। और यह मेरा घर है यह मेरी माँ है और यह मेरी पत्नी है।”

भूत बोला — “यह तो बड़ी अजीब सी बात है। हर आदमी जानता है कि यह मेरा घर है। यह मेरी पत्नी है और यह मेरी माँ है। और मैं तो यहाँ सालों से रह रहा हूँ। और तुम कहानी बना रहे हो कि यह तुम्हारा घर है और वह स्त्री तुम्हारी पत्नी है। ओ ब्राह्मण तुम्हारा दिमाग फिर गया लगता है।”

ऐसा कह कर भूत ने ब्राह्मण को उसके अपने ही घर से बाहर निकाल दिया। ब्राह्मण के मुँह से तो आवाज भी नहीं निकली। उसको यह भी अन्दाज नहीं पड़ा कि वह क्या करे। आखिर उसने अपना मामला राजा के सामने रखने का सोचा।

राजा ने भूत ब्राह्मण को देखा और फिर ब्राह्मण को देखा तो दोनों तो एक दूसरे की हूबहू एक सी शकल के थे। यह देख कर तो वह भी परेशान हो गया।

उसको तो पता ही नहीं चल रहा था कि कौन कौन था। और जब यही पता नहीं चल रहा था कि कौन कौन है तो वह उनका झगड़ा कैसे सिलटाये।

ब्राह्मण रोज ही राजा के पास जाता रहा और उससे अपना घर अपनी माँ और अपनी पत्नी वापस दिलवाने की प्रार्थना करता रहा। और राजा यह न पहचान पाने की वजह से कि कौन असली ब्राह्मण था और कौन भूत ब्राह्मण रोज उसे अगले दिन आने के लिये टालता रहा।

राजा रोज ही उससे कहता “कल आना।” और असली ब्राह्मण रोज ही अपना सिर पीटता हुआ और यह कहता हुआ वहाँ से चला जाता “उफ़ यह कैसी नीच दुनियाँ है। मुझे अपने ही घर से बाहर निकाल दिया गया है और एक दूसरे आदमी ने मेरे घर मेरी माँ और मेरी पत्नी को ले रखा है। और यह राजा भी क्या अजीब चीज़ है। यह भी कोई न्याय नहीं करता।”

अब ऐसा हुआ कि क्योंकि ब्राह्मण राजा के दरबार से रोज ही शहर के बाहर चला जाता था तो वह एक ऐसी जगह से गुजरता था जहाँ बहुत सारे चरवाहे बच्चे खेलते रहते थे। वे अपने गायों बैलों

को घास के मैदान में चरने के लिये छोड़ देते और वे खुद एक पेड़ के नीचे खेलने के लिये इकट्ठा हो जाते। वे शाही खेल खेलते थे।

उनमें से एक चरवाहे को राजा बना दिया जाता दूसरे को वजीर और तीसरे को कोतवाल और उनमें से कुछ पुलिस बन जाते।

वे रोज ब्राह्मण को उधर से रोते जाते हुए देखते तो एक दिन वजीर चरवाहे ने उस ब्राह्मण से पूछा कि वह रोज वहाँ से रोता हुआ क्यों जाता था। ब्राह्मण ने उसे अपनी कहानी सुनायी तो वजीर चरवाहा उसके सवाल का जवाब नहीं दे सका।

इस पर वजीर चरवाहा राजा चरवाहे के पास गया और उसे ब्राह्मण की बात बतायी। राजा चरवाहे ने एक सिपाही चरवाहे को बुलाया और उस ब्राह्मण को अपने सामने लाने का हुकुम दिया।

वह सिपाही चरवाहा ब्राह्मण के पास गया और उससे जा कर कहा — “हमारे राजा तुमको बुला रहे हैं।”

ब्राह्मण यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गया — “मगर क्यों? मैं अभी अभी राजा के पास से ही तो आ रहा हूँ। उन्होंने अभी तो मुझसे कल आने के लिये कहा था। अब वह मुझे फिर क्यों बुला रहे हैं?”

सिपाही चरवाहा हँसा और बोला — “यह हमारे राजा हैं जो तुमको बुला रहे हैं। हम चरवाहों के राजा शहर के राजा नहीं।”

ब्राह्मण ने पूछा — “यह चरवाहों का राजा कौन है?”

“आओ और अपने आप ही देख लो।”

ब्राह्मण उस सिपाही चरवाहे के साथ उनके राजा चरवाहे के पास चला गया ।

राजा चरवाहे ने ब्राह्मण से पूछा — “हे ब्राह्मण देवता, मैं आपको रोज इधर से रोते जाते देखता हूँ । आप क्यों रोते हैं?” इस पर ब्राह्मण ने उसको भी अपनी कहानी सुना दी ।

राजा चरवाहे ने उसकी कहानी सुन कर कहा— “मैं आपकी हालत समझ सकता हूँ । मैं आपकी सब चीजें आपको वापस दिलवा दूँगा पर अभी आप शहर के राजा के पास जाएँ और उससे यह इजाज़त ले कर आएं कि मैं आपका मामला सिलटा सकूँ ।”

ब्राह्मण फिर से राजा के पास गया और उससे चरवाहे राजा से अपना मामला सिलटाने की इजाज़त माँगी जिसने उसको यह मामला सिलटाने के लिये कहा था ।

राजा ने देखा कि उससे तो उस ब्राह्मण का मामला सिलट नहीं रहा था तो उसने उस राजा चरवाहे को यह मामला सिलटाने की इजाज़त दे दी ।

राजा चरवाहे ने ब्राह्मण को अगले दिन सुबह आने के लिये कहा । ब्राह्मण चला गया । ब्राह्मण के जाने के बाद राजा चरवाहे ने सारे मामले पर विचार किया और अगले दिन एक तंग गरदन की शीशी ले कर अपनी अदालत में आया ।

अगले दिन ब्राह्मण और भूत ब्राह्मण दोनों उसकी अदालत में आये। वहाँ काफी देर तक पूछागछी होती रही। गवाहियाँ होती रहीं।

उसके बाद राजा चरवाहा बोला — “मैंने आप लोगों के मामले के बारे में काफी सुन लिया। मैं आपका मामला अब बहुत जल्दी ही सिलटा देता हूँ।

देखिये यह शीशी है। आप दोनों में से जो कोई भी इस शीशी में पहले घुस जायेगा वही इस घर का मालिक होगा जिस पर लड़ाई चल रही है। अब मैं देखता हूँ कि कौन पहले इस शीशी में घुसता है।”

इतना कह कर उसने उस शीशी की डाट खोल दी और शीशी का खुला मुँह असली ब्राह्मण और भूत ब्राह्मण की तरफ कर दिया।

यह देख कर असली ब्राह्मण बोला — “तुम तो गाय भैंस चराने वाले चरवाहे हो और तुम्हारी अक्ल भी वैसी ही एक चरवाहे वाली है। ऐसा कौन सा आदमी है जो इस तंग गरदन वाली छोटी सी शीशी में घुस सकता है। उँह।”

राजा चरवाहा बोला — “अगर आप इस तंग गरदन वाली छोटी सी शीशी में नहीं घुस सकते तो इसका मतलब यह है कि आप इस घर के मालिक नहीं हैं। यह तो बड़ी सीधी सी बात है।”

फिर वह भूत ब्राह्मण की तरफ देख कर बोला — “आपका क्या विचार है जनाब?”

राजा चरवाहा आगे बोला — “हाँ अगर आप इस शीशी में घुस सकते हैं तो यह घर, यह माँ और यह पत्नी सब आपके हैं।”

भूत ब्राह्मण बोला — “हाँ हाँ क्यों नहीं। मैं इस शीशी के अन्दर घुस सकता हूँ।”

और अपनी बात को रखते हुए और सबको आश्चर्य में डालते हुए उसने अपने आपको एक बहुत ही छोटे से कीड़े में बदला और तुरन्त ही उड़ कर उस शीशी में घुस गया।

जैसे ही वह भूत ब्राह्मण उस शीशी में घुसा तो राजा चरवाहे ने उस शीशी का मुँह उसकी डाट लगा कर बन्द कर दिया। अब वह भूत ब्राह्मण शीशी में बन्द हो गया और फिर उसमें से बाहर नहीं निकल सका।

फिर राजा चरवाहे ने असली ब्राह्मण से कहा — “लीजिये ब्राह्मण देवता अब आप इस शीशी को ले जाएँ और समुद्र में फेंक दें। और जा कर अपना घर अपनी माँ और अपनी पत्नी को सँभालें।”

ब्राह्मण तो उसका फैसला देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गया और बहुत खुश हुआ कि जो न्याय शहर का राजा नहीं कर सका वह न्याय एक मामूली से चरवाहे ने पल भर में कर दिया।

उसको बहुत बहुत धन्यवाद देते हुए अपने घर चला गया और बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहा। उसके कई बेटे बेटियाँ भी हुए।



9 भूतनी पत्नी⁴⁷

भूतों की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक गरीब ब्राह्मण अपनी माँ और पत्नी के साथ रहता था। उसके घर के पास ही एक तालाब था जिसके किनारे पर एक पेड़ खड़ा था। उस पेड़ के ऊपर एक शंखचिन्नी⁴⁸ भूतनी रहती थी।

एक दिन रात को ब्राह्मण की पत्नी को उस तालाब पर जाना पड़ा। जब वह उस तालाब पर जा रही थी तो रास्ते में शंखचिन्नी भूतनी खड़ी थी। ब्राह्मणी उससे छू गयी।

इस पर वह भूतनी उस ब्राह्मणी से बहुत गुस्सा हो गयी और उसने उसको गले से पकड़ लिया और अपने पेड़ पर चढ़ गयी। वहाँ ले जा कर उसने उसको पेड़ के तने के एक छेद में ढकेल दिया।

⁴⁷ The Ghostly Wife (Tale No 14) – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site :

https://en.wikisource.org/wiki/Folk-tales_of_Bengal/A_Ghostly_Wife

Adapted from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. London, Macmillan & Co Limited. 1912. 1st ed 1883. 22 Tales. This book is available at the above Web Site.

⁴⁸ Shankchinnis or Shankhachurnis are female ghosts of white complexion. They usually stand at the dead of night at the foot of trees, and look like sheets of white cloth.

वहाँ तो वह स्त्री डर के मारे मरी सी पड़ गयी। भूतनी ने उसके कपड़े उतार कर खुद पहने और ब्राह्मण के घर चली गयी। तो न तो ब्राह्मण ने और न ही उसकी माँ ने बहू में कोई बदलाव देखा।

ब्राह्मण ने सोचा कि उसकी पत्नी तालाब से वापस आ गयी है और ब्राह्मण की माँ ने सोचा कि उसकी बहू तालाब से वापस आ गयी है। पर अगली सुबह माँ ने अपनी बहू में कुछ बदलाव देखा।

उसकी बहू शरीर से कुछ कमजोर थी सो वह कोई भी काम करने में देर लगाती थी। पर यह क्या। आज तो वह कुछ बदली हुई लग रही थी। आज तो वह अपना काम बहुत जल्दी जल्दी कर रही थी।

उस समय तो उसने उसके इस व्यवहार को कुछ अनदेखा कर दिया और यह बात न तो उसने अपने बेटे से कही और न बहू से ही उसने कुछ कहा बल्कि मन ही मन बहुत खुश हुई कि उसकी बहू अब बदल गयी है और अब वह काम जल्दी जल्दी करने लगी है।

पर यह बात उसके मन से नहीं गयी। उसका आश्चर्य रोज ब रोज बढ़ता ही गया।

अब उसकी बहू का खाना पहले की बजाय बहुत जल्दी बन जाता। जब वह उसको पास के कमरे से कुछ लाने के लिये कहती तो वह उसको उतने से भी कम समय में ले आती जितना समय किसी आदमी को एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने में लगता है।

क्योंकि वह भूतनी बजाय उस कमरे में जाने के अपना हाथ लम्बा करके उस कमरे तक बढ़ाती और वह चीज़ वहाँ से उठा लेती। क्योंकि भूत तो अपने शरीर के हिस्सों को अपनी इच्छा अनुसार छोटा बड़ा कर सकते हैं।

एक दिन माँ ने भूतनी को यह करते देख लिया तो उस दिन उसने बहू से कुछ दूर से एक बरतन मँगवाया तो भूतनी ने अनजाने में ही अपना हाथ कई गज लम्बा किया और पल भर में ही उसको वह बरतन ला कर दे दिया। माँ तो देखती की देखती ही रह गयी।

उसने बहू से तो कुछ नहीं कहा पर यह बात उसने अपने बेटे को बतायी। उसके बाद माँ और बेटे ने उसको बहुत करीब से देखना शुरू कर दिया।

एक दिन माँ ने देखा कि घर में आग नहीं है और उसको यह भी मालूम था कि उसकी बहू उसे लाने के लिये कहीं बाहर भी नहीं गयी है। पर तभी उसने देखा कि रसोईघर के चूल्हे में तो आग जल रही है।

वह अन्दर गयी तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसकी बहू खाना पकाने के लिये किसी ईंधन का इस्तेमाल नहीं कर रही बल्कि उसकी अपनी टॉग चूल्हे में रखी हुई है। और उसकी वही टॉग जल रही है।

माँ ने जो कुछ देखा था वह अपने बेटे को बताया कि उसकी बहू चूल्हा जलाने के लिये किसी ईंधन का इस्तेमाल नहीं कर रही थी बल्कि अपनी टॉग चूल्हे में जला रही थी।

इससे दोनों ने यह तय किया कि वह बहू उस लड़के की असली पत्नी नहीं थी बल्कि कोई भूतनी थी। बाद में लड़के ने भी वे सब काम जो उसकी माँ ने देखे थे खुद अपनी आँखों से देखे।

सो एक ओझा⁴⁹ बुलाया गया। जब वह आया तो सबसे पहले तो वह यही जानना चाहता था कि वह स्त्री असली बहू थी या भूतनी थी।

यह जानने के लिये कि वह स्त्री स्त्री थी या कोई भूतनी थी उसने सबसे पहले हल्दी की एक गॉठ जलायी और उसको उस स्त्री की नाक के नीचे रखा।

यह एक न फेल होने वाला तरीका था जिससे यह जाना जा सकता था कि कोई भूत था या आदमी। क्योंकि कोई भी भूत जलती हुई हल्दी की बू सहन नहीं कर सकता था।

जैसे ही वह जलती हुई हल्दी की गॉठ उस स्त्री की नाक की तरफ ले जायी जा रही थी तो वह स्त्री बहुत जोर से चिल्लाती हुई कमरे से बाहर भागी।

⁴⁹ Translated for the word "Exorcist"

इससे अब यह साफ हो गया कि वह स्त्री या तो खुद ही कोई भूतनी थी और या फिर वह स्त्री थी पर किसी भूत या भूतनी ने उसको पकड़ लिया था।

ओझा ने उस स्त्री को पकड़ कर उससे पूछा कि वह कौन थी।

पहले तो उसने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया तो ओझा ने अपने जूते निकाले और उनसे उसको पीटना शुरू किया।

इस पर भूतनी नाक की आवाज में बोली कि वह एक शंखचिन्नी थी जो तालाब के किनारे एक पेड़ पर रहती थी। उसने ब्राह्मणी बहू को अपने पेड़ के तने के एक छेद में रखा हुआ है। क्योंकि एक रात उसने उसको छू लिया था। और अगर कोई भी आदमी उस छेद की तरफ जाता तो वह स्त्री वहाँ देख ली जाती।

यह सुन कर वह स्त्री उस पेड़ के तने के छेद में से लायी गयी। वह तो बिल्कुल मरी जैसी हो रही थी।

भूतनी को फिर से जूतों से पीटा गया तो उसने कहा कि वह अब आगे से ब्राह्मण और उसके परिवार के साथ ऐसा कभी नहीं करेगी। ओझा ने उसे छोड़ दिया और वह अपनी जगह चली गयी।

ब्राह्मण की पत्नी भी धीरे धीरे ठीक हो गयी। वे दोनों बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे और फिर उनके बहुत सारे बच्चे हुए।

10 भूत जो तैले में बन्द होने से डरता था⁵⁰

भूतों की यह लोक कथा एशिया के भारत देश के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है। यह वहाँ की एक बहुत ही लोकप्रिय कथा है। तो लो तुम भी पढ़ो यह लोक कथा।

यह लोक कथा डरावनी नहीं है सो इसको पढ़ने से पहले डरने की कोई जरूरत नहीं है। यह एक हँसी की लोक कथा है। पढ़ो और हँसो।

एक बार की बात है कि एक नाई अपनी पत्नी के साथ रहता था। पर वह अपनी पत्नी के साथ खुश नहीं था क्योंकि उसकी पत्नी हमेशा यही शिकायत करती थी कि वहाँ उसको ठीक से खाने को नहीं मिलता।

वह इस गरीब नाई को बहुत दुखी करती थी। वह हमेशा अपनी पति से कहती थी कि अगर तुमको मुझे खिलाने को नहीं था तो तुमने मुझसे शादी क्यों की। जिन लोगों के पास अपनी पत्नी को रखने के साधन नहीं होते उनको शादी नहीं करनी चाहिये।

जब मैं अपने पिता के घर में थी तो वहाँ उनके घर में खाने पीने के लिये बहुत था। पर यहाँ तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं यहाँ

⁵⁰ The Ghost Who Was Afraid of Being Bagged (Tale No 20) – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Folk-tales_of_Bengal/A_Ghostly_Wife

Adapted from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. London, Macmillan & Co Limited. 1912. 1st ed 1883. 22 Tales. This book is available at the above Web Site.

उपवास करने⁵¹ के लिये आयी हूँ। केवल विधवाएँ ही उपवास करती हैं। और मुझे लगता है कि मैं तो तुम्हारी ज़िन्दगी में ही विधवा हो गयी हूँ।”

वह यह सब कह कर ही सन्तुष्ट नहीं होती थी। एक दिन वह बहुत गुस्सा हो गयी और उसने उसे झाड़ू से पीट दिया।

कुछ तो शर्म की वजह से और कुछ यह सोचते हुए कि वह खुद ही उसके गुस्से और पीटने की वजह है उसने अपना नाईगीरी का सामान उठाया और घर छोड़ कर चला गया।

उसने कसम खायी कि अब जब तक वह अमीर नहीं हो जायेगा वह अब यहाँ कभी वापस नहीं आयेगा और न ही अपनी पत्नी का मुँह देखेगा।

वह दिन में गाँव गाँव घूमता फिरता अपनी नाईगीरी करता और रात को जंगल के किनारे पर लगे किसी पेड़ के नीचे आ कर बहुत देर तक अपनी किस्मत को कोसता रहता।

एक दिन ऐसा हुआ कि वह नाई उस दिन जिस पेड़ के नीचे लेटा हुआ था उस पर एक भूत रहता था। भूत ने एक आदमी पेड़ के नीचे लेटा हुआ देखा तो उसने उसको खाना चाहा।

इस इरादे से वह भूत पेड़ से नीचे उतरा, उसने अपने हाथ फैलाये और अपना मुँह फाड़ कर ताड़ के पेड़ जितना लम्बा हो कर

⁵¹ Translated for the word “Fasting”. Fasting means either less eating or not eating once a day or even not eating at all for the day.

नाई के सामने खड़ा हो गया और बोला — “ओ नाई अब मैं तुझे खाने वाला हूँ। अब तुझे कौन बचायेगा?”

एक भूत को अपने सामने इस तरह से खड़ा देख कर और उसके मुँह से यह सुन कर तो नाई के सारे बाल खड़े हो गये और उसका पूरा शरीर काँप गया पर भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि उसका दिमाग अभी काम कर रहा था।

वह अपनी आदत के मुताबिक बोला — “ओ आत्मा, तुम मुझे खाने आयी हो। ज़रा रुको पहले मैं तुम्हें यह तो दिखा दूँ कि मैंने आज रात को ही कितने भूत पकड़े हैं जो मेरे थैले में बन्द हैं। और मुझे खुशी है कि मुझे एक भूत और मिल गया। क्योंकि अब मेरे थैले में एक भूत और बढ़ जायेगा।”

कह कर नाई ने अपने थैले में से मुँह देखने वाला एक छोटा सा शीशा निकाला। वह शीशा वह अपने नाई के सामान के साथ हमेशा ही अपने साथ रखता था ताकि उसके ग्राहक उसमें अपना चेहरा देख सकें कि उनकी हजामत ठीक से बनी या नहीं।

उस शीशे को ले कर वह खड़ा हो गया और उसने वह शीशा उस भूत के चेहरे के सामने कर दिया और बोला — “देखो उन भूतों में से एक भूत यह रहा जिसको मैंने पकड़ कर अपने थैले में बन्द कर रखा है।

अब मैं तुमको भी बन्द करके इसी थैले में डाल लूँगा ताकि मेरे थैले वाले भूत को एक साथी मिल जाये।”

भूत ने अपना चेहरा जो उस शीशे में देखा तो उसे विश्वास हो गया कि नाई जो कुछ कह रहा था वह सच ही कह रहा था कि उसने अपने थैले में भूत बन्द कर रखे थे।

वह डर गया। अब वह नाई से बड़ी मुलायमियत से बोला — “नाई जनाब, तुम जो कहोगे मैं वही करूँगा पर बस तुम मुझे अपने थैले में नहीं रखना। तुम जो कहोगे मैं तुमको वही दे दूँगा।”

नाई उसको इतनी मुलायमियत से बात करते देख कर अकड़ कर बोला — “तुम सारे भूत बहुत ही झूठे होते हो। तुम लोगों पर कोई विश्वास नहीं किया जा सकता। पहले तुम वायदा करते हो और फिर उसे पूरा नहीं करते हो।”

भूत गिड़गिड़ा कर बोला — “नाई जनाब। मेरे ऊपर दया करो। मैं तुमको वही ला कर दूँगा जो भी तुम मुझे ला कर देने को कहोगे। हाँ अगर मैं तुमको वह चीज़ ला कर न दूँ जो तुम कहो तब तुम मुझे अपने थैले में रख सकते हो।”

नाई बोला — “तब ठीक है। अच्छा तो अभी तो मुझे तुम 1000 सोने की मुहरें⁵² ला कर दो। और देखो कल तक मेरे लिये मेरे घर में एक अनाजघर तैयार करो जो धान⁵³ से भरा हुआ हो।

अभी तो तुम जल्दी से जाओ और सबसे पहले मेरे लिये पहले 1000 मुहरों का इन्तजाम करो। और अगर तुम मेरे लिये वह नहीं

⁵² 1000 gold coins or Muhar – currency at that time in India.

⁵³ Translated for the word Paddy”. Paddy is the raw rice from which the rice is extracted.

लाये जो मैंने तुमसे लाने के लिये कहा है तो निश्चित रूप से तुम मेरे थैले में बन्द हो जाओगे।”

भूत इस शर्त पर तुरन्त ही तैयार हो गया। वह वहाँ से जल्दी जल्दी गया और थोड़ी ही देर में 1000 सोने की मुहरों का एक थैला ले कर वहाँ आ गया।

नाई तो उन मुहरों को देख कर बहुत ही खुश हो गया। उसने भूत को फिर से याद दिलाया कि कल शाम तक उसको उसके घर में एक अनाजघर बनवाना है जिसमें धान भरा हो।

सुबह सवेरे ही नाई अपने भारी खजाने को ले कर घर आया और घर का दरवाजा खटखटाया। उसकी पत्नी अभी तक अपने पति को गुस्से में झाड़ू से मारने के लिये अपने आपको कोस रही थी कि मैंने अपने पति को झाड़ू से क्यों मारा।

दरवाजे की खटखटाहट सुन कर उसने दरवाजा खोला तो उसको तो बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसके पति ने उसके सामने सोने की चमकती हुई मुहरों का ढेर लगा दिया।

अगले दिन बेचारे भूत ने थैले में बन्द हो जाने के डर से नाई के घर में एक बहुत बड़ा अनाजघर बना दिया। सारी रात वह धान के बड़े बड़े थैले उठा कर वहाँ लाता रहा और उसके अनाजघर में वह धान भरता रहा जब तक वह ऊपर तक नहीं भर गया।

जब इस डरे हुए भूत के चाचा ने देखा कि उसका लायक भतीजा इस तरह से चावल के बड़े बड़े थैले ला ला कर उस

अनाजघर को भर रहा है तो उसने उससे पूछा कि यह मामला क्या है। तू ऐसा क्यों कर रहा है। उसके भतीजे ने उसे सब बताया कि क्या मामला था।

उसके चाचा भूत ने कहा — “तू तो बहुत ही बेवकूफ है। तू क्या सोचता है कि वह नाई तुझे अपने थैले में बन्द कर सकता है? अरे वह नाई तो बहुत ही चालाक है। वह तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। उसने तुझे धोखा दिया है क्योंकि तू बहुत सीधा है न।”

भतीजा भूत बोला — “तुम नाई की ताकत पर शक करते हो तो ज़रा आओ और देखो। मैं तुमको दिखाता हूँ।”

सो चाचा भूत नाई के घर गया और उसकी खिड़की में से उसके घर में झाँका। जैसे ही भूत नाई के घर के पास आया नाई को भूत के आने का उसी समय हवा का एक तेज़ झोंका महसूस हुआ तो उसने उस खिड़की के सामने एक बहुत बड़ा शीशा रख दिया।

और बोला — “आओ अब तुम ज़रा आ कर देखो तो। मैं तो तुमको भी इस थैले में बन्द कर लूँगा।”

चाचा भूत ने जब उस शीशे में अपना चेहरा देखा तो वह भी डर गया और उसने नाई से वायदा किया कि वह उसके घर में एक और अनाजघर बनवायेगा जिसमें धान नहीं बल्कि चावल भरा होगा।

इस तरह वह नाई केवल दो रातों में ही बहुत अमीर हो गया और फिर अपनी पत्नी के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहा। बाद में उसके कई बेटे बेटियाँ भी हुए।



11 भूत जो भाग गया⁵⁴

भूत की यह लोक कथा भारत के हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा क्षेत्र में कही सुनी जाती है। यह किसी सच्चे भूत की कथा नहीं है। तो फिर कैसे भूत की कथा है यह? आओ देखते हैं।

एक बार की बात है कि काँगड़ा जिले के एक गाँव में एक नौजवान रहता था। उसका नाम था धनियाँ। उसकी दाल मसाले की दूकान थी जिसकी आमदनी से वह और उसकी पत्नी आराम से रह लेते थे। वह बहुत ही सीधा सादा था।

वह इतना सीधा था कि उसको अपनी रोजमर्रा की परेशानियों को भी हल करने में बहुत मुश्किल होती थी। और फिर जब कभी ऐसा होता तो उन परेशानियों का हल ढूँढने के लिये वह अपने दोस्त कुलफी राम के पास भागा जाता।

कुलफी राम एक हाथ देखने वाला था। वह रोज एक आम के पेड़ के नीचे बैठता था और वहाँ लोगों के आने का इन्तजार करता जो उसके पास अपना भविष्य पूछने के लिये अपना हाथ दिखाने के लिये आते थे।

एक दिन जब कुलफी राम इस तरह से आम के पेड़ के नीचे बैठा अपने ग्राहकों का इन्तजार कर रहा था तो धनियाँ उसके पास

⁵⁴ The Ghost That Got Away – a folktale from HP, India – Adapted from the Web Site :

http://www.indianetzone.com/32/folktale_himachal_pradesh_indian_folktale.htm

दौड़ता हुआ आया। उस समय वह और दिनों से कुछ ज़्यादा ही परेशान लग रहा था। उसको ऐसे आते देख कर कुलफी राम हँस पड़ा। उसने उससे पूछा — “आज तुम्हारे ऊपर ऐसा कौन सा कहर आ पड़ा कि तुम इतने परेशान लग रहे हो?”

धनियाँ बोला — “दोस्त मैं वाकई बहुत परेशान हूँ क्योंकि मुझे अपनी ससुराल जाना है।”

यह सुन कर तो कुलफी राम और ज़ोर से हँस पड़ा और बोला — “तो इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है तुमको तो खुश होना चाहिये। क्योंकि वहाँ जा कर तो तुम्हारी बहुत खातिरदारी होने वाली है।

वे लोग तुमको बहुत अच्छी तरीके से रखेंगे। तुम्हारी हर जरूरत का खयाल रखने के लिये वे इधर से उधर भागे फिरेंगे।”

अब तक धनियाँ का धीरज छूट गया था। उसने कहा कि वह वहाँ जाना नहीं चाहता था क्योंकि वहाँ जाते में उसको डर लगता था।

अब क्योंकि उसकी पत्नी उसके साथ तो जा नहीं रही थी तो उसको वहाँ अकेले ही जाना था। और उसको तो यह भी नहीं पता था कि वहाँ जा कर वह उनसे बात कैसे करेगा।

यह सुन कर कुलफी राम ने पहले तो अपना हाथ धनियाँ के हाथ पर ज़ोर से मारा और फिर थपथपाया फिर बोला — “तुम

बिल्कुल चिन्ता न करो मैं तुम्हें सब बता दूँगा कि वहाँ जा कर तुम्हें क्या कहना है क्या करना है।”

धनियों को अभी भी अपने ऊपर भरोसा नहीं था सो वह बोला कि अगर वह खुद उसके साथ चले तो बहुत अच्छा रहेगा। कुलफी राम को तो यह सुन कर बहुत अच्छा लगा और वे दोनों अगले दिन धनिया की ससुराल चल दिये।

रास्ते में कुलफी राम ने धनियों को बताया कि वहाँ जा कर उसको दो बातों का ख्याल रखना है। पहली बात तो यह कि उसको वहाँ जा कर बहुत ज़्यादा बात नहीं करनी है। दूसरे वहाँ उसको बहुत ज़्यादा खाना नहीं है।

कुछ घंटे बाद वे दोनों धनियों की ससुराल आ पहुँचे। धनियों की पत्नी का पूरा परिवार उनकी अगवानी के लिये बाहर आ गया। धनियों की सास ने धनियों का हाथ जोड़ कर स्वागत किया।

धनियों का चेहरा धीरे धीरे लाल पड़ता जा रहा था पर कुलफी राम ने उसको बहुत बोलने से मना कर रखा था इसलिये उसने भी अपनी सास के स्वागत का जवाब केवल हाथ जोड़ कर ही दिया। वह बोला कुछ नहीं।

धनियों की बजाय कुलफी राम बोला कि धनियों इस लम्बी यात्रा से कुछ थक गया था सो उसको रात भर की नींद की जरूरत है।

सो तुरन्त ही वे रात के खाने के लिये ले जाये गये। वहाँ उनको नीचे फर्श पर बिछे तिनकों के एक मोटे आसन पर बिठाया गया और फिर उनको खाना परोसा गया।

खाना देख कर तो धनियाँ की आँखें फटी की फटी रह गयीं। खास करके लाल लाल करारी पूरियाँ देख कर। वे पूरियाँ तो उसने दो पूरियाँ एक ही बार में खा लीं पर फिर उसको अपने दोस्त कुलफी राम की सलाह याद आयी तो उसको तो उसकी सलाह माननी ही थी।

सो दूसरी पूरी खाने के बाद जो कुछ भी उसको खाने के लिये दिया गया उसने हर वह चीज़ खाने के लिये मना कर दिया। हालाँकि खाने को मना करने का उसका मन बिल्कुल नहीं था फिर भी वह हर खाने की चीज़ को मना करता ही रहा।

उधर कुलफी राम बराबर खाता ही रहा और अपना हर कौर मजे ले ले कर खाता रहा।

खाना खाने के बाद दोनों दोस्तों को एक दूसरे कमरे में ले जाया गया जहाँ दो बिस्तर लगे हुए थे। इन बिस्तरों के गद्दे बहुत ही मुलायम थे और इतने आरामदेह थे कि वे दोनों उन पर लेटते ही सो गये।

पर आधी रात को धनियाँ की आँख खुल गयी। उसके पेट में भूख के मारे चूहे कूद रहे थे। वह बहुत भूखा था।

धनियों कुछ देर तक तो इस आशा में लेटा रहा कि शायद उसको नींद आ जाये पर कुछ देर बाद ही उसको पता चल गया कि इतनी भूख में वह सो नहीं पायेगा। जैसे जैसे समय गुजरता जा रहा था उसकी भूख बढ़ती जा रही थी।

आखिर वह उसको सह नहीं सका तो उसने अपने दोस्त को हाथ से हिला कर जगाया।

कुलफी राम कुछ नाराज सा तो हुआ पर उसने बिस्तर से उठ कर दरवाजा खोल कर इधर उधर देखा। उनके कमरे से घर का आँगन दिखायी देता था।

आँगन के उस पार एक कमरा था जो शायद घर का भंडारघर था क्योंकि उन लोगों ने घर की मालकिन को उस कमरे में जा कर घी का डिब्बा लाते हुए देखा था। इस भंडारघर में खाने के लिये जरूर ही कुछ रखा होगा। पर इस कमरे के दरवाजे पर तो ताला भी लगा था।

कुलफी राम ने कुछ पल सोचा और बोला कि जब तक हम तुम्हारी सास को नहीं जगायेंगे तब तक रात के इस समय में तो हमें कोई खाना नहीं मिल सकता। पर धनियों ने तो शर्म के मारे उसके पास जाने से मना कर दिया।

इस पर कुलफी राम ने कहा कि फिर तो भंडारघर में जाना ही पड़ेगा और वहीं कुछ देखना पड़ेगा। अगर उनकी किस्मत अच्छी होगी तो शायद वहाँ उनको कुछ खाने को मिल जाये।

धनियों उस भंडारघर के एक रोशनदान से हो कर भंडारघर में घुसा। उसने एक रस्सी अपनी कमर में बाँधी कुलफी राम के कन्धे पर चढ़ा और रोशनदान से हो कर भंडारघर में उतर गया। कुलफी राम बाहर ही खड़ा रहा।

प्लान यह था कि जब धनियों पेट भर कर खा लेता तो कुलफी राम उसकी रस्सी पकड़ कर खींच लेता। इस प्लान के अनुसार धनिया भंडारघर में पहुँच गया।

पहले तो उसको वहाँ अँधेरे की वजह से कुछ दिखायी नहीं दिया। पर जब वह अँधेरे में कुछ देखने लायक हुआ तो उसको वहाँ कुछ शकलें दिखायी दीं जैसे टीन के डिब्बे बक्से बोटलें बालटियाँ आदि।

वहाँ चावल और गेहूँ के बोरे रखे थे पर खाने के लिये कुछ नहीं था। तभी धनियों को छत से लटकता मिट्टी का एक घड़ा दिखायी दे गया। उसको देख कर वह खुश हो गया शायद उसमें उसके खाने लायक कोई चीज़ हो।

सो धनियों एक बक्से पर खड़ा हो गया और अपना हाथ जितना ऊँचा ले जा सकता था ले गया पर फिर भी मुश्किल से वह उस घड़े की तली को ही छू सका।

फिर उसने कोने में खड़ी एक डंडी उठा ली और उसे उस घड़े पर मारी। उसकी मार से घड़े में दरार पड़ गयी और उसमें से किसी चीज़ की पतली सी धारा निकल पड़ी।

धनियों ने उस धारा से जो कुछ भी गिर रहा था खाने के लिये तुरन्त ही अपना मुँह खोल दिया। उसने उसका बड़ा सा घूँट सटका तो उसे पता चला कि वह तो शहद था।

कुछ मिनट तक धनियों उस घड़े के नीचे खड़ा रहा और शहद पीता रहा। जब उसने पेट भर कर शहद पी लिया तो अचानक ही उस घड़े का एक बड़ा सा टुकड़ा टूट गया और वह पतली सी धारा एक बहुत ही मोटी सी धारा में बदल गयी।

इससे पहले कि धनियों उस घड़े के नीचे से हटता उस घड़े का सारा शहद उसके ऊपर बिखर गया था। वह उसके बालों पर बिखर गया था। वह उसकी आँखों और कानों पर से होता हुआ उसके कुरते तक चला गया था।

वह वहाँ से हटना चाहता था पर वह तो उसके पैरों के नीचे भी था। सो वह फर्श पर चिपक गया था। वह अपने दोस्त का नाम लेकर चिल्लाया तो कुलफी राम बोला कि वह चिन्ता न करे वह उसको बाहर निकाल लेगा।

पर यह कहना आसान था करना मुश्किल था। कुलफी राम एक पतला दुबला सा आदमी था जबकि धनियों इतना हल्का नहीं था। इसके अलावा धनियों के पैर शहद की वजह से फर्श पर चिपके हुए थे।

कुलफी राम ने उसको अपनी पूरी ताकत से खींचा पर वह धनियों के केवल पैर ही फर्श से उठा सका और वह भी केवल

एकाध फुट । बस इतने में ही उसकी साँस फूल गयी और धनियाँ धम्म की आवाज के साथ नीचे गिर पड़ा ।

इस शोर से धनियाँ के ससुर की आँख खुल गयी । वह धनियाँ की सास को ले कर भागा हुआ भंडारघर की तरफ आया ।

उन दोनों को आते देखते ही कुलफी राम का तो दिल डूबने लगा । पर वह बहुत जल्दी सोचता था और जल्दी जवाब देता था । उसने अपनी उस हालत बचाने के लिये उनको एक कहानी बना कर सुनायी ।

उसने कहा कि करीब पाँच साल से एक भूत मेरे पीछे पड़ा है । वह मेरे साथ तीर्थयात्रा पर जाना चाहता था पर एक समझदार आदमी होने के नाते मैंने उसको मना कर दिया ।

पर उस भूत ने मेरा इस घर तक पीछा किया और अब मैं उसको यहाँ से बाहर निकालने के लिये अकेला रहना चाहता हूँ । नहीं तो अगर उस भूत को उन दोनों में से कोई भी पसन्द आ गया तो फिर वह यह घर छोड़ कर कभी नहीं जायेगा ।

धनियाँ की सास डर गयी और उसने कुलफी राम को तुरन्त ही भंडारघर की चाभी दे दी और दोनों तुरन्त ही अपने कमरे में वापस चले गये ।

कुलफी राम ने भंडारघर का दरवाजा खोला और धनियाँ को बाहर आने के लिये कहा ।

शहद में डूबा हुआ सारा चिपचिपा और कुछ गुस्सा सा धनियाँ बाहर आया और एक और कमरे में यह सोचते हुए चला गया कि वह उसका कमरा था। पर वह उसका कमरा नहीं था उसमें तो रुई भरी हुई थी जो उस परिवार के लिये रजाई बनाने के काम आने वाली थी।

बस जैसे ही वह उस कमरे के अन्दर गया वहाँ रखी हुई रुई उसके शहद लिपटे शरीर पर चिपक गयी। अब वह सचमुच में ही एक भूत जैसा लगने लगा।

उसके सास ससुर अपने कमरे के दरवाजे की झिरी में से यह सब तमाशा देख रहे थे। जब उन्होंने धनियाँ को रुई लिपटे देखा तो दोनों ने डर के मारे आपस में एक दूसरे को पकड़ लिया और अपना सिर छिपा कर वहीं खड़े रह गये। हिल भी न सके।

सो अब सब कुछ साफ था। कुलफी राम धनियाँ को पीछे वाले कुँए पर ले गया। धनियाँ ठीक से नहाया धोया अपने रुई वाले कपड़े मिट्टी में गाड़ दिये और अपने कमरे में चला गया।

अगले दिन जब वह सो कर उठा तो वह वैसा ही साफ सुथरा और भोला भाला लग रहा था जैसा कि वह पहले दिन जब वहाँ आया था तब लग रहा था।

एक बार फिर सुबह के खाने में उसने थोड़ा सा ही खाया पर लौटते समय गाँव के बाहर वाले किनारे पर की दूकान पर दोनों ने

पेट भर कर दूध जलेबी खायीं । और फिर दोनों दोस्त हँसते हुए
अपने अपने घर आ गये ।



12 बाँसुरी⁵⁵

बहुत साल पुरानी बात है एक आदमी अपनी दो पत्नियों के साथ रहता था। उसकी बड़ी पत्नी के तो कई बच्चे थे परन्तु छोटी पत्नी के केवल एक ही बेटा था।

एक दिन वह आदमी अपने सारे परिवार के साथ खेत पर गया। वहाँ सारे दिन सबने मिल कर काम किया फिर शाम को अपने अपने चाकू हल टोकरियाँ आदि इकट्ठी कीं और जल्दी जल्दी अपने घर चल दिये।



सात जंगल और सात नदियाँ पार कर वे सब अपने घर आये। अचानक उसकी छोटी पत्नी का बेटा बोला कि वह अपनी बाँसुरी तो खेत पर ही भूल आया था और अब वह उसको लाने के लिये अभी अभी वापस खेत पर जाना चाहता था।

उसकी माँ ने रो कर उससे कहा भी कि इस समय रात को वह बाँसुरी लेने वहाँ न जाये। वह अगले दिन सुबह होते ही उसको नयी बाँसुरी दिला देगी।

पर वह तो अड़ गया कि उसको तो वही बाँसुरी चाहिये क्योंकि वह बाँसुरी उसकी अपनी बनायी हुई थी और वह उस बाँसुरी को किसी भी कीमत पर बदलना नहीं चाहता था।

⁵⁵ Flute – a folktale from Nigeria, Africa.

उसके पिता ने भी उसको बहुत समझाया और मना किया कि इस समय उसको खेत पर अपनी बाँसुरी लेने नहीं जाना चाहिये पर वह नहीं माना। आखिरकार उसके माता पिता ने उसको जाने तो दिया पर उससे होशियारी से जाने के लिये कहा।

जब वह खेत पर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। वहाँ उसे भूत दिखायी दिये क्योंकि यह समय वहाँ भूतों के काम करने का था।

उन्होंने जब वहाँ एक बच्चे को देखा तो वे बहुत गुस्सा हुए। भूतों के नेता ने कहा — “ओ आदमी के बच्चे, तुझे यहाँ इस समय किसने भेजा है और तू यहाँ क्यों आया है?”

बेचारा बच्चा डर के मारे वहीं की वहीं खड़ा रह गया। बड़ी मुश्किल से उसके मुँह से निकला — “दिन में मेरे माता पिता यहाँ खेत पर काम करने आये थे। उस समय मैं यहाँ अपनी बाँसुरी भूल गया था अभी मैं वही लेने आया हूँ।”

भूतों के नेता ने पूछा कि अगर उसे उसकी बाँसुरी दिखायी जाये तो क्या वह उसे पहचान सकता है?

लड़का खुशी से बोला — “हाँ हाँ, क्यों नहीं। वह मेरी बाँसुरी है। मैं उसे पहचानूँगा क्यों नहीं।”

भूतों के नेता ने खाल के थैले में से एक सोने की बाँसुरी निकाली और उसको लड़के को दिखा कर पूछा — “क्या यह है तेरी बाँसुरी?”

लड़का बोला — “नहीं नहीं, यह मेरी बाँसुरी नहीं है।”

भूतों के नेता ने एक बार फिर उस चमड़े के थैले में हाथ डाला और अबकी बार उसने उसमें से एक चाँदी की बाँसुरी निकाली और उसको दिखा कर उस लड़के से पूछा कि क्या वह थी उसकी बाँसुरी?

लड़का उदास हो कर बोला — “नहीं, यह बाँसुरी भी मेरी नहीं है।”

अबकी बार भूतों के नेता ने अपने थैले में से एक बाँस की बाँसुरी निकाली और उसको लड़के को दिखा कर पूछा — “क्या यह है तेरी बाँसुरी?”

लड़का उस बाँस की बाँसुरी को देखते ही खुशी से चिल्ला पड़ा — “हाँ, यही है मेरी बाँसुरी।”

भूतों का नेता बोला — “अगर यही है तेरी बाँसुरी तो इसे बजा कर दिखा न।”

लड़के ने भूतों के नेता के हाथ से बाँसुरी ले ली और उसे बजाना शुरू किया।

भूत उस लड़के की बाँसुरी सुन कर बहुत खुश हुए। भूतों का नेता बोला — “बच्चे, हम तेरी बाँसुरी सुन कर बहुत खुश हुए इसलिये हम तेरे माता पिता को एक भेंट देना चाहते हैं।”



ऐसा कह कर उसने दो छोटे भूतों को बुलाया और उनसे दो बरतन लाने के लिये कहा। दोनों भूत तुरन्त ही दो बरतन ले आये। भूतों के नेता ने उस लड़के से एक बरतन लेने के लिये कहा।

बरतन दोनों एक से थे, दोनों बन्द थे पर दोनों में से एक छोटा था और एक बड़ा। लड़के ने उनमें से छोटा वाला बरतन उठा लिया।

भूतों के नेता ने कहा — “खुश रह बच्चे। जब तू घर पहुँच जाये तो अपने माता पिता के सामने ही इस बरतन को तोड़ना।” लड़के ने भूतों के नेता का सिर झुका कर धन्यवाद किया और अपने घर चल पड़ा।

घर पहुँच कर लड़के ने वैसा ही किया जैसा कि भूतों के नेता ने उससे करने के लिये कहा था। उसने अपने माता पिता को बुलाया और सबसे पहले तो उसने अपने माता पिता को खेत पर जो कुछ भी हुआ था वह बताया और फिर उनके सामने ही उसने उस बरतन को तोड़ दिया।

तुरन्त ही उनके घर का आँगन अच्छी अच्छी चीजों से भर गया जैसे सोना, चाँदी, काँसा, अच्छे अच्छे कपड़े, मखमल, अनेक प्रकार के खाने, गाय, बकरियाँ आदि। लड़के की माँ ने उस सामान से दो टोकरियाँ भरीं और अपनी सौत को दे आयी।

परन्तु उस आदमी की बड़ी पत्नी यह सब देख कर इतनी जली भुनी कि उसने वह भेंट भी नहीं ली और चिन्ता की वजह से वह रात भर सो भी नहीं पायी।

सुबह उठते ही उसने अपनी सौत से उन सब चीजों को पाने का तरीका पूछा। छोटी पत्नी ने जो कुछ भी हुआ था वह सब उसको सच सच बता दिया।

अगले दिन तड़के ही उसने अपने बड़े बेटे को उठाया और उसको अपनी बाँसुरी लाने के लिये कहा। फिर बोली — “आज हम लोग अपने खेत पर जायेंगे।”

“पर माँ हम लोग कल ही तो खेत पर गये थे।” लड़का बोला।

माँ ने कहा — “लेकिन हम आज भी जायेंगे।” कह कर वह अपने बेटे के साथ खेत पर चली गयी। जब वे खेतों पर गये तो वहाँ कोई काम तो था नहीं क्योंकि सारा काम तो पहले ही दिन खत्म हो चुका था फिर भी सारा दिन वे लोग वहाँ रहे।

जब शाम हुई तो बड़ी पत्नी ने अपनी टोकरी उठायी और घर चलने के लिये तैयार हुई। तो लड़के ने भी अपनी बाँसुरी उठायी और वह भी अपनी माँ के साथ घर चलने लगा।

जब वे घर की ओर चलने लगे तभी माँ ने कहा — “अरे बेवकूफ लड़के, क्या तुझे मालूम नहीं कि बाँसुरी को कैसे भूला जाता है? चल छोड़ अपनी बाँसुरी यहीं और घर चल।”

अब क्योंकि यह बाँसुरी लड़के की अपनी बनायी हुई तो थी नहीं और न उसको बजानी ही आती थी इसलिये यह सुन कर लड़के ने बाँसुरी वहीं पड़ी छोड़ दी और माँ के साथ घर चल दिया।

जैसे ही वे लोग घर में घुसे कि उसकी माँ ने अपने बेटे से कहा “जा और खेत पर से अपनी बाँसुरी उठा ला।” लड़का बेचारा यह सुन कर रोने लगा।

वह रात में अकेले खेत पर जाने से डर रहा था इसलिये कि वह वहाँ अकेले नहीं जाना चाहता था क्योंकि उसको मालूम था कि रात को वहाँ पर भूत आते थे और वह उनसे बहुत डरता था।

परन्तु उसकी माँ ने उसे घर के बाहर धकेलते हुए कहा — “जा और बिना बाँसुरी और बिना बरतन के वापस नहीं आना।”

लड़का बेचारा डरते डरते खेत पर पहुँचा। वहाँ पहले दिन की तरह से भूत आ चुके थे। भूतों के नेता ने कहा — “ओ आदमी के बच्चे, तुझे यहाँ इस समय किसने भेजा है और तू यहाँ क्यों आया है?”

लड़का डर के मारे रोते रोते बोला — “आज हम यहाँ खेत पर बिना किसी काम के आये थे। मैं दिन में यहाँ अपनी बाँसुरी छोड़ गया था तो मेरी माँ ने मुझे मेरी बाँसुरी और भेंट वाला बरतन लाने के लिये भेजा है।”

भूतों के नेता ने पहले की तरह से थैले में से एक सोने की बाँसुरी निकाली और उसको उस लड़के को दिखा कर पूछा “क्या यह है तेरी बाँसुरी?”

अब इस लड़के ने तो बाँसुरी अपने हाथ से बनायी नहीं थी जो उसे उससे लगाव होता। वह सोने की बाँसुरी देख कर ललचा गया और बोला — “हाँ, यही है मेरी बाँसुरी।”

भूतों के नेता ने कहा — “अच्छा? यही है तेरी बाँसुरी? तो यह ले अपनी बाँसुरी। पर ज़रा इसे बजा कर तो दिखा।”

उस लड़के को तो बाँसुरी बजानी भी नहीं आती थी सो उसकी बाँसुरी से ऐसे ही कुछ बेमतलब आवाजें निकलने लगीं। वह लड़का बहुत परेशान हुआ पर कुछ कर नहीं सका क्योंकि उसने तो कभी बाँसुरी बजायी ही नहीं थी। थोड़ी ही देर में वह थक कर रुक गया।

सभी भूत खामोश खड़े थे किसी से कुछ कहते नहीं बन पा रहा था। तब भूतों के नेता ने ही दो छोटे भूतों को बुलाया और उनसे बोला — “लाओ वे दोनों बरतन उठा लाओ।”

जैसे ही वे दो भूत दो बरतन उठा कर लाये लड़के ने एक भूत के हाथ से बड़ा वाला बरतन छीन लिया और जाने के लिये तैयार हुआ तो भूतों का नेता बोला — “बेटा, जब तू घर पहुँच जाये तभी अपने माता पिता के सामने ही इस बरतन को तोड़ना।”

लड़का बोला “हाँ मुझे मालूम है।” और बिना धन्यवाद दिये अपने घर की तरफ दौड़ गया।

हाँफता हाँफता वह घर पहुँचा। बरतन बहुत बड़ा था और भारी भी। उसकी माँ घर के बाहर ही उसका इन्तजार कर रही थी। अपने बेटे को बड़ा सा बरतन लाते देख कर वह बहुत खुश हुई।

लड़का हाँफते हाँफते ही बोला — “उन्होंने कहा है कि इस बरतन को मैं अपने माता पिता के सामने ही तोड़ूँ सो पिता जी को और बुला लो।”

माँ तुनक कर चिल्लायी — “तुम्हारे पिता को उस बरतन के बारे में क्या मालूम है जो हम उनको बुलायें। इसको तो हम अपने आप ही तोड़ लेंगे।” और लड़के को अन्दर ला कर उसने अपनी झोंपड़ी का दरवाजा बन्द कर लिया।

उसने अपने सभी बच्चों को इकट्ठा किया और अपनी झोंपड़ी में बने सभी छेद और दरारें भी बन्द कर दीं ताकि कोई भी चीज़ उनमें से निकल कर बाहर दूसरी झोंपड़ियों की तरफ न जा सके।

फिर उसने वह बरतन तोड़ दिया। बरतन के टूटते ही उसमें से सब प्रकार की बीमारियाँ जैसे कोढ़, चेचक, तपेदिक आदि निकल पड़ीं और उन्होंने उस स्त्री और उसके बच्चों को वहीं मार दिया।

यह कहानी हमें कई शिक्षा देती है। पहली बात तो हमको लालची नहीं होना चाहिये। क्योंकि पहला वाला बच्चा लालची नहीं था इसी लिये वह दूसरों का आदर पा सका।

दूसरी बात यह कि बिना सोचे समझे दूसरों की नकल करने की आदत अच्छी नहीं होती। दूसरी माँ ने अपने बच्चे से छोटी पत्नी के बच्चे की नकल करवायी तो क्या फल पाया।

और तीसरे हमें दूसरों के उपकारों का धन्यवाद जरूर देना चाहिये।



13 शिकारी और उसकी करामाती बाँसुरी⁵⁶

भूतों की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश के बच्चे बड़े शौक से कहते और सुनते हैं।

एक बार ओजो⁵⁷ नाम का एक बहुत ही अच्छा शिकारी था। वह भी दूसरे योरुबा शिकारियों की तरह कई कई महीनों तक शिकार के लिये बाहर रहता था।

ओजो जंगल में जा कर ताड़ के पत्तों और डंडियों आदि से अपने रहने के लिये एक झोंपड़ी बना लेता और फिर वहाँ से अपना तीर कमान ले कर वह रोज शिकार के लिये निकल जाता।

हर रात सोने से पहले वह अपने लाये शिकार का माँस भूनता और जब उसके पास काफी भुना माँस इकट्ठा हो जाता तब वह उसे अपनी पत्नी के पास जाता। उसकी पत्नी उस भुने माँस को बेच कर घर की जरूरत की चीजें खरीद लाती।

ओजो के पास तीन कुत्ते थे। उसने उनके बड़े अजीब से नाम रखे हुए थे। एक का नाम था “टुकड़े कर दो”, दूसरे का नाम था “खा डालो” और तीसरे का नाम था “साफ कर दो”।

इन तीन कुत्तों के अलावा उसके पास एक पुरानी बाँसुरी भी थी जिसके बारे में ओजो का कहना था कि वह बड़ी करामाती थी।

⁵⁶ The Hunter and His Magic Flute – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

⁵⁷ Ojo – name of the Nigerian hunter

उसका कहना था कि जंगल में वह कितनी भी दूर चला जाये पर जब भी वह वह बाँसुरी बजाता था उस बाँसुरी की आवाज उसके कुत्तों तक पहुँच जाती थी और उसको सुन कर उसके तीनों कुत्ते उसके पास भागे चले आते थे। इसलिये वह यह बाँसुरी हमेशा अपने पास ही रखता था।

एक बार शिकार पर जाते समय उसने अपने तीनों कुत्तों को घर में बाँध कर छोड़ दिया और अपनी पत्नी को कहा कि वह उनकी ठीक से देखभाल करे और किसी भी समय अगर वे ज़रा से भी बेचैन दिखायी दें तो वह उनको छोड़ दे उन्हें बँधा न रहने दे।

ऐसा कह कर वह वहाँ से चल दिया।

तीन दिन के सफर के बाद वह एक ऐसी जगह पर आया जहाँ उसको अपना कैम्प डालना था। इस तरफ पहले वह कभी नहीं आया था। उसकी अनुभवी आँखें बता रहीं थीं कि उसको शिकार के लिये यहाँ पर काफी जानवर मिलेंगे।

ओजो अपना कैम्प लगाने में लग तो गया पर वहाँ उसको बहुत डर लग रहा था। उसको कुछ ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई उसको छिपे छिपे देख रहा है। और वह भी कोई आदमी या जानवर नहीं बल्कि कोई भूत देख रहा है।

जब वह छोटा था तो अक्सर जंगल में रहने वाले भूतों के बारे में सुनता रहता था। वह उनसे डरता भी था हालाँकि उसका उनसे कभी सामना नहीं हुआ था।

दूसरे शिकारियों ने तो उनको देखा भी था यहाँ तक कि उनकी तो जंगल की माँ इयाबोम्बा⁵⁸ से मुलाकात भी हुई थी।

उनका कहना था कि इयाबोम्बा 10 आदमियों के बराबर बड़ी है और उसके शरीर पर बहुत सारे भूखे मुँह लगे हुए हैं।

जब ओजो का कैम्प लग गया तो वह उसमें अन्दर आराम करने के लिये लेट गया। वह आराम करने के लिये लेट तो गया पर कोई उसको देख रहा था यह खयाल अभी भी उसके दिमाग से निकला नहीं था।

लेटने के बाद उसको लगा कि कोई चीज़ उसके पास आ रही थी। वह उसको देखने के लिये उठ कर खड़ा हो गया कि इतने में उसने देखा कि जंगल की माँ इयाबोम्बा उसके सामने खड़ी है।

वह उसको देख कर इतना डर गया कि उससे भागा भी नहीं जा सका। वह तो बस जहाँ था वहीं का वहीं खड़ा रह गया।

अचानक इयाबोम्बा बोली — “शिकारी, डर नहीं। मुझे मालूम है कि तू यहाँ क्यों आया है। अगर तू मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा तो मैं भी तुझे नहीं खाऊँगी।”

और जैसे वह अचानक वहाँ आयी थी वैसे ही अचानक वह वहाँ से चली भी गयी।

⁵⁸ Iyabomba – the mother of Forest

ओजो का शिकार करने का समय आ गया था पर वह सोच रहा था कि क्या इयाबोम्बा के वायदे पर भरोसा किया जा सकता है?

वह सारा दिन शिकार करता रहा और जब वह शाम को शिकार करके अपने कैम्प लौटा तो जंगल की माँ का डर उसके दिमाग से निकल चुका था।

रात को उसने अपना लाया माँस काटा और उसे भूनने के लिये आग जलायी। माँस भूना, खाना पकाया, खाना खाया और सो गया।

अगले दिन वह फिर शिकार पर निकल गया और जब वह शिकार ले कर फिर कैम्प लौटा तो उसे लगा कि कोई उसके पीछे उसके कैम्प में आया था।

उसे वहाँ इयाबोम्बा के बड़े बड़े पैरों के निशान पहचानने में देर नहीं लगी। जब वह अपनी झोंपड़ी के अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उसका तो कल का भुना हुआ माँस भी गायब था।

ओजो ने सोचा कोई बात नहीं शायद अब जंगल की माँ सन्तुष्ट हो गयी होगी इसलिये उसने आग जला कर उस दिन का लाया माँस भूना शुरू कर दिया।

पर इयाबोम्बा अभी भी सन्तुष्ट नहीं हुई थी क्योंकि ओजो जब भी शिकार करके कैम्प वापस लौटता तो अपना पहले दिन का लाया हुआ माँस गायब पाता।

उसको यह भी डर था कि वह किससे पूछे कि इयाबोम्बा ऐसा क्यों करती थी वह रोज उसका माँस क्यों ले जाती थी। इयाबोम्बा से तो वह यह बात पूछ ही नहीं सकता था क्योंकि तब तो शायद वह उसी को खा जाती।

एक हफ्ता गुजर चुका था। ओजो रोज शिकार करता, रोज माँस भूनता पर उसके पास बचाया हुआ भुना हुआ माँस ज़रा सा भी नहीं था।

ओजो का गुस्सा इसलिये और भी ज़्यादा बढ़ रहा था क्योंकि इतने ज़्यादा शिकार उसको पहले कभी किसी और जगह नहीं मिले थे। पर इस तरीके से तो अगर वह वहाँ पर एक साल भी और रहता तो भी शायद वह कुछ नहीं बचा पाता।

एक दिन ओजो के सब्र का बाँध टूट गया और उसका गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। इस गुस्से ने उसका डर दूर कर दिया और उस दिन वह इयाबोम्बा का अपनी झोंपड़ी में ही बैठ कर इन्तजार करने लगा पर उस दिन वह वहाँ आयी ही नहीं।

अन्त में उसने अपना सामान बाँधा और वापस जाने लगा। जाते जाते वह चिल्लाया — “तुमने मेरे मारे शिकार का माँस क्यों खाया? क्या तुम्हारे जंगल में जो भी शिकारी आता है तुम हर उस शिकारी का माँस चुरा लेती हो?”

उसका इतना बोलना था कि इयाबोम्बा अपने सारे मुँह खोले हुए जंगल में भयानक आवाज करती हुई ओजो के सामने आ खड़ी हुई जैसे कि वह उसको खा ही जायेगी।

ओजो वहाँ से भाग खड़ा हुआ। इयाबोम्बा उसको पीछे से बुला रही थी परन्तु ओजो तो बस भागा ही जा रहा था।

पर भागने का कोई फायदा नहीं था क्योंकि जंगल की माँ बहुत बड़ी थी और वह पल भर में ही ओजो के पास आ गयी। उसको पास आया देख कर ओजो एक पेड़ पर चढ़ गया।

आश्चर्य की बात कि वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकती थी इसलिये वह उस पेड़ के नीचे ही खड़ी हो गयी जिस पेड़ पर ओजो बैठा था और उसने नीचे से पेड़ का तना काटना शुरू कर दिया।

यह देख कर ओजो बहुत डर गया कि जब पेड़ कट जायेगा तब उसका क्या होगा। ओजो को तब अपनी बाँसुरी याद आयी और उसने अपनी बाँसुरी बजानी शुरू कर दी।

बाँसुरी की आवाज उसके कुत्तों के कानों में पड़ी। सुनते ही उसके घर में उसके तीनों कुत्ते भौंकने लगे। ओजो की पत्नी उनकी रस्सी खोलने गयी तो उसके रस्सी खोलने से पहले ही उन कुत्तों ने रस्सी तोड़ ली और वहाँ से भाग लिये।

इधर इयाबोम्बा जल्दी जल्दी पेड़ का तना काट रही थी। ओजो ने कुछ पल तो इन्तजार किया पर उसने देखा कि पेड़ तो बस गिरने ही वाला था।

उसने अपनी जेब से एक चमड़े का बटुआ निकाला और उसमें रखा जादुई पाउडर पेड़ पर डाल दिया इससे पेड़ फिर से साबुत हो गया।

इयाबोम्बा को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह पेड़ साबुत कैसे हो गया पर फिर भी उसने फिर से उस तने को काटना शुरू कर दिया।

पर जब भी पेड़ गिरने को होता तो ओजो उस पर थोड़ा सा जादुई पाउडर डाल देता और वह पेड़ फिर से साबुत हो जाता।

इस तरह पेड़ को काटते और साबुत करते करते काफी देर हो गयी। ओजो का पाउडर भी खत्म हो गया था और अब पेड़ फिर से गिरने वाला था वह बहुत परेशान था कि अब क्या होगा था कि तभी उसने देखा कि उसके तीनों कुत्ते भागे चले आ रहे हैं।

देखते देखते वे तीनों इयाबोम्बा पर टूट पड़े और थोड़ी ही देर में उन्होंने इयाबोम्बा को काम तमाम कर दिया और उसका काफी सारा मॉस खा लिया।

ओजो पेड़ से नीचे उतर आया और अपने सामान और कुत्तों के साथ अपने घर वापस आने लगा कि तभी उसने देखा कि उसके सामने एक बहुत सुन्दर लड़की खड़ी है।

वह बोली — “मुझे इयाबोम्बा ने कैदी बना कर रखा हुआ था अब जब तुमने उसे मार दिया है तो मैं आजाद हो गयी हूँ। क्या तुम मुझे अपने घर ले चलोगे ओजो और मुझे अपनी पत्नी बनाओगे?”

ओजो को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह लड़की उसका नाम कैसे जानती थी। फिर भी वह उसको अपनी पत्नी बना कर अपने घर ले आया।

उसकी पहली पत्नी उन सबको देख कर बहुत खुश हुई और यह जान कर भी कि जंगल की माँ इयाबोम्बा मर चुकी है और उसके पति ने इस लड़की को उसके चंगुल से बचा लिया गया है।

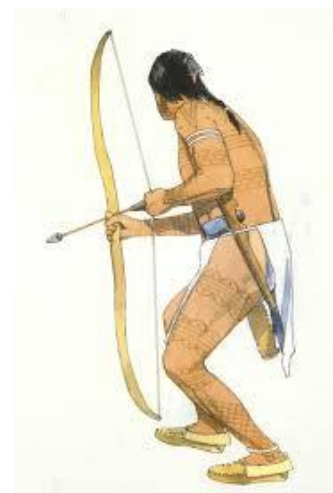
उसने उन सबका स्वागत किया और उस लड़की को घर में ठहरने की जगह दी।

पर उस रात को उस घर में एक अजीब घटना हुई। ओजो की दूसरी पत्नी उठी और एक बहुत बड़ी औरत के रूप में बदलने लगी जिसके बहुत सारे मुँह थे।

असल में यह कोई कैदी लड़की नहीं थी बल्कि यह इयाबोम्बा की बहिन थी और उसकी हत्या का बदला लेने के लिये ओजो की पत्नी बन कर आयी थी। पर तीनों कुत्तों ने उसको भी खा लिया।

ओजो अब जब उस जंगल में जाता था तो उसको वहाँ कोई तंग नहीं करता था। वह वहाँ आराम से शिकार करके घर लाता था।

उसने फिर कभी दूसरी शादी भी नहीं की।



14 टिनटिन्यिन और भूतों की दुनियाँ का राजा⁵⁹

भूतों की यह लोक कथा भी अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत पुरानी बात है जब योरुबा देश में टिनटिन्यिन नाम का एक लड़का रहता था। उसका पिता तो उसकी छोटी उम्र में ही नहीं रहा पर कुछ साल बाद उसकी माँ भी चल बसी।

अब वह इस दुनियाँ में अकेला रह गया और कोई उसकी देखभाल करने वाला भी नहीं था।

वह जंगली जानवरों और पक्षियों के साथ जंगल में रहने लगा। उन्होंने ही उसको खाना खिलाया, उसको कपड़े पहनाये, उसकी देखभाल की और उसको बड़ा किया।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वहाँ रहते रहते उसने जानवरों और पक्षियों की भाषा भी सीख ली थी और योरुबा भाषा तो उसको आती ही थी।

उस जंगल में कुछ दूरी पर एक बड़ा शहर था जिसका राजा बहुत ताकतवर था। उस शहर में हर साल एक बहुत बड़ा त्यौहार मनाया जाता था।

⁵⁹ Tintinyin and the Unknown King of the Spirit World – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

टिनटिन्यिन हर साल उस त्यौहार में जाता था क्योंकि उसको नाचना, गाना, ढोल बजाना, अच्छे कपड़े पहनना सभी कुछ बहुत अच्छा लगता था। उस शहर का राजा देखने में भी सुन्दर था सो टिनटिन्यिन को वह राजा भी बहुत अच्छा लगता था।

पुराने समय में भूत⁶⁰ भी ऐसे त्यौहारों पर आया करते थे। बस उनको कोई पहचान नहीं पाता था क्योंकि वे सामान्य लोगों के रूप में आते थे और त्यौहार खत्म होने पर चुपचाप वापस चले जाया करते थे।

राजा को भी इस बात का पता था पर क्योंकि कोई उनको पहचान नहीं पाता था इसलिये वह यह बात यकीन के साथ नहीं कह सकता था। पर वह भी यह जानना चाहता था कि वाकई यह बात सच थी कि नहीं।

एक बार राजा ने इस बात का फैसला करने का निश्चय किया कि वाकई यह सच था या नहीं सो उसने इस त्यौहार से पहले ही अपने शहर में यह घोषणा करा दी कि जो भी आदमी इस त्यौहार में भूतों के राजा को पहचानेगा और उसे राजा को बतायेगा उसको बहुत सारी भेंटें इनाम में मिलेंगीं और शहर में ऊँचा ओहदा मिलेगा।

टिनटिन्यिन ने भी यह घोषणा सुनी। वह राजा के महल में गया और राजा से कहा कि वह भूतों के राजा को पहचान कर राजा को बतायेगा।

⁶⁰ Translated for the word "Ghost"

अब टिनटिन्यिन को तो यह पता भी नहीं था कि वह भूतों का राजा दिखायी कैसा देता होगा पर उसे विश्वास था कि उसके जंगल के साथी इस बारे में उसकी सहायता जरूर करेंगे।

जब राजा ने इस अजीब से जंगली लड़के के मुँह से ये शब्द सुने कि वह भूतों के राजा को पहचान लेगा तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि ऐसा लड़का भूतों के राजा को कैसे पहचान सकता है।

सो उसको धमकाने के लिये और उसे जनता को बेवकूफ बनाने से रोकने के लिये उसने टिनटिन्यिन से कहा कि अगर वह उसको न पहचान सका तो सजा के तौर पर उसकी भूतों के राजा के लिये बलि चढ़ा दी जायेगी।

इतना कहने पर भी राजा को यह सुन कर आश्चर्य हुआ कि वह अभी भी अपनी बात पर अड़ा था। उसने कहा कि अगर वह ऐसा न कर सका तो वह मरने के लिये तैयार था।

ऐसा कह कर वह लड़का वहाँ से चला गया और राजा आश्चर्य में पड़ा वहीं बैठा रह गया। वह यह कहे बिना न रह सका “यह लड़का भी अजीब है।”

त्यौहार के दिन टिनटिन्यिन ने देखा कि हर आदमी उसी को घूर रहा है। सारे शहर में टिनटिन्यिन को भूतों के राजा को पहचानने वाली बात फैल चुकी थी और सभी इस ताक में थे कि देखें क्या होता है कैसे वह लड़का भूतों के राजा को पहचानता है।

कुछ लोग टिनटिन्यिन के लिये दुखी भी थे कि यह बेचारा मुफ्त में ही मारा जायेगा क्योंकि इतनी भीड़ में भूतों के राजा को पहचानना आसान नहीं था।

शहर का राजा पेड़ों की छाँह में एक बड़े ऊँचे सिंहासन पर बैठा था। उसने टिनटिन्यिन को बुलाया और कहा — “लड़के, अब बताओ वह भूतों का राजा इस भीड़ में कौन सा है।”

टिनटिन्यिन भी राजा से बात करने के बाद चिन्तित था क्योंकि हालाँकि उसने जंगल के सारे जानवरों और पक्षियों से कह रखा था कि उसको भूतों के राजा को पहचानना है पर अभी तक भूतों के राजा का कोई नामो निशान नजर नहीं आ रहा था।

वह परेशान सा यह सोच ही रहा था कि भूतों के राजा को पहचानने के लिये वह क्या करे कि उसको एक नन्हा सा ईगा चिड़ा⁶¹ दिखायी दिया। नन्हा ईगा गा रहा था।

उसकी भाषा और तो कोई समझ नहीं पा रहा था पर टिनटिन्यिन की समझ में सब आ रहा था। वह गा रहा था —

टिनटिन्यिन, हालाँकि तुमने बहुत बड़ा बोल बोला है
कि तुम भूतों के राजा को जानते हो जो मरे हुआँ और शैतानों का राजा भी है
पर तुम उसे नहीं जानते और तुमने अपनी ज़िन्दगी दाँव पर लगा दी है
तुम मेरे दाँये पंख की सीध में देखो एक आदमी अकेला खड़ा है
उसके शरीर पर कोई ऐसा निशान नहीं है जिससे वह राजा लगे
वह एक डंडे पर झुका खड़ा है पर वही राजा है भूतों का और मेरे बेटे में तुम्हारा पिता हूँ

⁶¹ Ega Bird – a very small black and yellow bird found in Western Nigeria from Senegal to Cameroon countries

इस तरह टिनटिन्यिन को पता चल गया कि उसका पिता ईगा चिड़े की आवाज में बोल रहा है और उसकी सहायता कर रहा है।

उधर शहर का राजा उसके जवाब के इन्तजार में था। वह बोला — “बताओ लड़के, वह भूतों का राजा कौन सा है। मैं तुम्हारे जवाब का इन्तजार कर रहा हूँ।”

टिनटिन्यिन सीधा उस आदमी के पास गया और उसको पकड़ कर राजा के पास ले आया। जब लोगों ने देखा तो लोग हँस पड़े कि या तो वह लड़का उनका बेवकूफ बना रहा है या फिर उस बूढ़े आदमी का।

तब उस बूढ़े आदमी ने अपना पैर खोल कर अपने टखने पर बँधा एक काला मोती दिखाया। यही भूतों के राजा का निशान था। बस फिर उसने न तो राजा से ही कुछ कहा और न ही वह किसी और से बोला और गायब हो गया।

शहर के राजा ने अपना वायदा निभाया। उसने उसको बहुत सारी भेंटें दीं और शहर में ऊँचा ओहदा दिया। इसके बाद तो टिनटिन्यिन बहुत बड़ा आदमी हो गया।

हालाँकि भूतों के राजा को फिर किसी ने उस त्यौहार में नहीं देखा पर तब से उस शहर के किसी और राजा ने भी उसको देखने की इच्छा प्रगट नहीं की। पर लोगों का कहना है कि वह अभी भी एक गरीब आदमी के वेश में वहाँ आता है।



देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

- 1 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-1
- 2 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-2
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई-मीडियम पर सोसायटी ऑफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

- 1 जंजीवार की लोक कथाएँ — 10 लोक कथाएँ — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — 45 लोक कथाएँ — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

- 1 रैवन की लोक कथाएँ-1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — प्रभात प्रकाशन
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2 — प्रभात प्रकाशन
- 4 शेवा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
- 5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
- 6 बंगाल की लोक कथाएँ — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टेक्नोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

- 1 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1
<http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html>
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2
<http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html>
- 3 रैवन की लोक कथाएँ-1
<http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html>
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-2
<http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html>
- 5 रैवन की लोक कथाएँ-3
<http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html>
- 6 इटली की लोक कथाएँ-1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाएँ-2

<http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html>

8 इटली की लोक कथाएँ-3

<http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html>

9 इटली की लोक कथाएँ-4

<http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html>

10 इटली की लोक कथाएँ-5

<http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html>

11 इटली की लोक कथाएँ-6

<http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyam.html>

12 इटली की लोक कथाएँ-7

<http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html>

13 इटली की लोक कथाएँ-8

<http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html>

14 इटली की लोक कथाएँ-9

<http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html>

15 इटली की लोक कथाएँ-10

<http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html>

16 जंजीवार की लोक कथाएँ

http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html

17 चालाक ईकटोमी

http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

18 नौस देशों की लोक कथाएँ-1

<http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html>

19 नौस देशों की लोक कथाएँ-2

<http://www.rachanakar.org/2018/12/2.html>

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं

<https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596>

1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाएँ

2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

Facebook Group

<https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks>

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में



सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में एम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी एड किया। 1976 में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में एम एल एस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट ऑफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोटी के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट ऑफ़ सर्जन अफ्रीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से 1993 में ये यू एल एस आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर ऑफ़ लाइब्रेरी एंड इनफ़ॉर्मेशन साइन्स किया। फिर 4 साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी - www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रही हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला - कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाएँ हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी - हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगी।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाएँ सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक 1500 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको “देश विदेश की लोक कथाएँ” क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
दिसम्बर 2018